मूल्य रु। ५-००

सलंग अंक ९३ जनवरी-२०१५

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख

मासिक

श्री स्वामिनारायण मंदिर
कालुपुर में
धनुर्मास धुन

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) ईन्टरनेशनल स्वामिनारायण सत्संग ओर्गेनाइजेशन (आइ.एस.एस.ओ.) की वार्षिक सामान्य सभा में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के सानिध्य में अमेरिका के मंदिरो-चेप्टरो के प्रतिनिधि । (२) बोस्टन मंदिर में शाकोत्सव प्रसंग पर शाक में वधार करते हुये प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री साथ में पू. पी.पी. स्वामी आदि संत । (३) अमेरिका के श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलान्टा में अन्नकूट के प्रसंग पर भजन-कीर्तन करते हुये हरिभक्त ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ८ ● अंक : ९३

जनवरी-२०१५

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	संध्या आरती	०६
०४.	प्रसादी के पत्रों का आचमन	०८
०५.	प.पू. लालजी महाराजश्री की अमृतवाणी	११
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१२
०७.	सत्संग बालवाटिका	१४
०८.	भक्ति सुधा	१७
०९.	सत्संग समाचार	२०

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

॥ अस्मदीयम् ॥

आ देहे करीने भगवान ना धाममां निवास करवो छे। पण वचमां क्यांय लोभावुं नथी ।'' अने कायरने ठेकाणे जे देहाभिमानी एवा भगवान ना भक्त छे। तेने तो प्रभु भज्यामां हजार जातना घाट थाय छे. जो करडां वर्तमान हशे तो नहि न जाय, ने शुभ वर्तमान हशे तो नभाशे ? अने वळी एवो पण विचार करे जे, आवो उपाय करी ए तो संसारमां पण सुखिया थईये, अने नभाशे तो हलवा हलवा सत्सगमां नभीशुं एवो भक्त होय ते कायरने ठेकाणे जाणजो । अने शूरवीर जे भगवानना दृढ भक्त होय ते कायर ने ठेकाणे जाणवो । अने शूरवीर जे भगवानना द्रढ भक्त होय तेने तो पिंड ब्रह्मांड संबंधी कोई जातनो घाट न थाय।'' (ग.म. २२)

इसलिये प्रिय भक्तो को भी अक्षरधाम में जाना है, ऐसा पक्का दृढ निश्चय करके इसी शरीर से अपने इष्टदेव श्रीहरि की भजन कर लेनी चाहिये और अपना आत्यंतिक कल्याण तथा श्रेय सिद्ध कर लेना चाहिये। निश्चय मे कचास नही रखना। श्रीजी महाराज ही सर्वोपरि सभी अवतारो के अवतारी अपने इष्टदेव है। इस तरह का निश्चय करलेना चाहिये।

हम सभी श्री नरनारायणदेव महोत्सव का दर्शन किये। ऐसा दिव्य महोत्सव आगामी फरवरी-मार्च-२०१५ के अंक में प्रकाशित होगा। जो दर्शन से वंचित रह गये हैं वे अंक में दर्शन करके संतोष करेंगे।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(डिसम्बर-२०१४)

१३-१४ इन्दौर (एम.पी.) हरिभक्तों के यहाँ पदार्पण ।
१५ से १७ कच्छ रामपर तथा केरा पदार्पण ।
१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर निकोल पदार्पण ।
१९ विसनगर गाँव में पदार्पण ।
२० से २२ भुज मानकुवा (कच्छ) पदार्पण ।
२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर प.भ. भाविन पाठक के पुत्र का चौलसंस्कार प्रसंग पर आशीर्वाद देने पधारे ।
२४ से २८ श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव अपने शुभ सानिध्य में मोटेरा में भव्यातिभव्य सम्पन्न किये ।
३० भुज (कच्छ) शोभायात्रा तथा छात्रालय के उद्घाटन प्रसंग पर पदार्पण ।
३१ कच्छ सामत्रा पदार्पण ।

प.पू. भावि आचार्य १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(डिसम्बर-२०१४)

१ सलाव गाँव में प.भ. कनुभाई प्रभुदास पटेल के यहाँ पारायण प्रसंग पर पदार्पण ।
४ श्री स्वामिनारायण मंदिर वासणा भजन संध्या प्रसंग पर पदार्पण । सायंकाल श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया पूजा प्रसंग पर पदार्पण ।
७ श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया महापूजा प्रसंग पर पदार्पण ।
१३ श्री स्वामिनारायण मंदिर मणीयोर (इडर देश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर भाटेरा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण ।
२४ से २८ श्री नरनारायणदेव महा महोत्सव अपने अध्यक्ष स्थान पर भव्याति भव्य धूमधाम से सम्पन्न किये ।

संध्या आरती

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

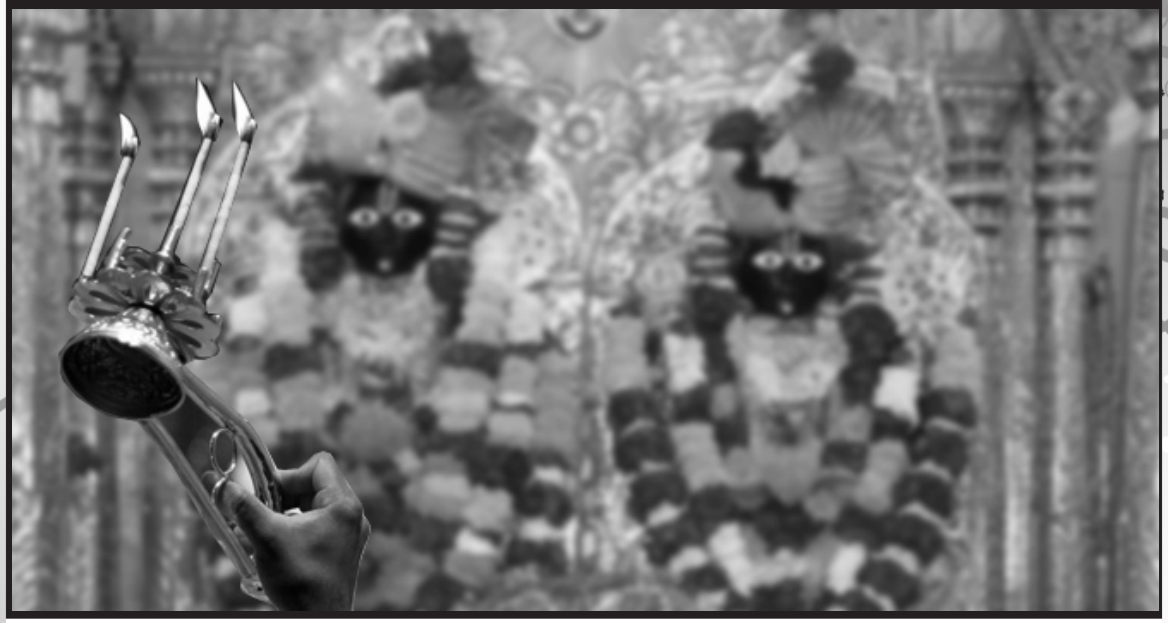

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवानने सुदर्शन चक्र के समान शिक्षापत्री का निर्माण करके आश्रितो को दिया । उस में सर्वजीव हितावह की आज्ञा का उल्लेख किया । जिस में ३५० जितने शास्त्रों का सार लिखा । जिस में प्रत्येक आज्ञा को जीवन में उतारने लायक हैं । शिक्षापत्री ६३ वें श्लोक में लिखे हैं कि ''सभी भक्त नित्यप्रति सायंकाल भगवान के मंदिर में जाये और वहाँ ऊंचे स्वर में भगवान के नामका संकीर्तन करें । वैष्णव पूजा विधिमें पांचवार आरती का प्रतिपादन किया गया है । मंगला आरती, श्रृंगार आरती, राजभोग आरती, संध्या आरती, शयन आरती । श्रीजी महाराजने आश्रितो को पांच आरतियों में से प्रातः सायंकी आरती के दर्शन के लिये आज्ञा की है । पूजा विधिप्रातः काल-ब्रह्ममुहूर्त में करना चाहिये । लेकिन सायंकाल की आरती के दर्शन हेतु सभी को मंदिर जाने की आज्ञा की है । इसलिये सायंकाल के दर्शन की अनिवार्यता बताई है । अन्य समय में दर्शन न सम्भव हो तो चलेगा लेकिन संध्या में अवश्य जाना चाहिये । संध्या काल को गौधूली वेला भी कहते हैं । शास्त्रों में संध्या के समय त्रिकाल संध्या में से संध्या करने का वेदो में विशेष महत्व बताया गया है । शास्त्रों में तथा पुराणो में स्पष्ट कहा गया है कि दैवी जीव यदि संध्या के समय संध्या कर्म या भगवान के नाम कीर्तन के साथ आरती का दर्शन न करे तो वह जीव दैवी जीव से मिटकर आसुरी वृत्ति का हो जाता है । संध्या का समय निशाचरो से अधिक प्रभावित होता है । वे आसुरी तत्व मनुष्य के मन में प्रवेश करके आसुरी वृत्ति का बना देते है । सूर्यास्त के बाद नकारात्मक ऊर्जा पृथ्वी पर फैल जातने से नकारात्मक तत्व पावरफुल हो जाते हैं । वह समय एक घन्टे का होता है । शास्त्रो में अनंत उदाहरण है कि मुनि. लोग भी पूजा संध्या, देवदर्शन, कीर्तन, सायंकाल नहीं करने से आसुरी वृत्ति के हो गये । निशाचरों की दृष्टि बहुत भयानक होती है । अच्छे अच्छे का पतन कराती है । इसलिये संध्या के समय मनुष्य दानत की वृत्ति का हो जाता है या शून्य मनस्क हो जाता है । रामायण की मन्थरा के खेल तथा भागवत में कश्यप एवं दिति की कहानी संन्ध्या समय में संध्याकर्म से चूक गये तो हिरण्यकश्यपु जैसा दानव पुत्र प्राप्त हुआ । विश्व में किसी भी धर्म में या मंदिर में दिन में पूजाया आरती नहोती हो तो भी सायंकाल तो पूजा-आरती होती ही है । इसलिये अपनी परम्परा या आसुरी वृत्ति को दूर करने के

लिये संध्या समय में यथाशक्ति पूजा-आरती करनी चाहिये । मंदिर में इसी का ध्यान रखकर सायंकाल पूजा-आरती की जीताती है। सायंकाल सभी के घरों में दीपक जलाया जाता है। श्रीजी महाराजने मंदिर में दर्शन के लिये सांयकाल ही निश्चय किया हो इसलिये सायंकाल दर्शन करने अवश्य जांये । शिक्षापत्री में तो मंदिर जाने की आज्ञा की है। उस में प्रतिदिन जाने की आज्ञा है। ऐसा नहीं कि सप्ताह में किसी दिन चले गये। घर में आरती कर लेना मंदिर जाने का विकल्प नहीं है। घर तथा मंदिर में बहुत अन्तर है। जिस गाँव में मंदिर न हो ऐसे स्थान पर रहना हो तो घर के मंदिर में आरती पूजा करके नामोच्चारण के साथ धून-कीर्तन करना चाहिये। अपने संप्रदाय में रामानंद स्वामी के समकाल से संध्या आरती के बाद रामकृष्ण गोविन्द जय जय गोविंद गाया जाता है, इसकी आठ कडी है। यह रामानंद स्वामी नित्य बोलते थे । इसलिये श्रीहरिने गुरु के प्रसादरुप स्मरणिका के रुप में संध्या के समय इस अष्टक को गाने की आज्ञा की है । इसके आलांवा कितने मंडल के अनुयायी को यह कीर्तन गाने के लिये कहा जाय तो कोई छोटा नही हो जायेगा। कितने लोग अन्तिम पद ही गाते हैं ।सभी के विचारो को मुबारकबाद लेकिन प्रसादी के इस अष्टक को सभी को गाना चाहिये । वह इस लिये की विष्णु पुराण में कहा गया है कि सत्युग में ध्यान से, त्रेतायुग में यज्ञ से, द्वापर युग में पूजा से, जो फल मिलता है वह कलियुग में नाम कीर्तन से मिलता है। नारद पुराण में कहा गया है कि - हरि, गोविंद, नारायण, केशव, वासुदेव, इत्यादि भगवान के नाम लेने वाले को पाप स्पर्श नहीं कर सकता। नारद पंचरात्र में लिखा है कि नाम संकीर्तन पुरुष पुरुष की सभा में स्त्रियां स्त्री की सभा में नाम संकीर्तन करे।

संध्या आरती का दर्शन करने वाले को पांच आरती के दर्शन का अपने आप फल मिल जाता है। संध्या आरती में रामकृष्णगोविन्द अष्टक - नवीन जीमूत समान वर्ण अष्टक निर्विकल्प स्तुति तथा जन्म्या कौशल इस की स्तुति अवश्य करनी चाहिये। वह इस लिये कि - निर्विकल्प स्तुति के गाने से एकादश नियम में कोई त्रुटि रह गयी हो तो प्रेमानंद स्वामी रचित स्तुति का गान करने से प्रायश्चित हो जायेगा। इसलिये सभी आश्रित संध्या के समय सभी कार्य से निवृत्त होकर संध्या आरती में दर्शन करने अवश्य जांये । इतना चूक जाने से अपने भीतर सदा के लिये आसुरी वृत्ति का घर हो जायेगा। जिसके निवारण के लिये जन्म जन्मातर तक भटकना पडेगा। श्रीहरि के वचन अनुसार एक दिन की भी संध्या आरती नहीं छोडनी चाहिये । आवश्यक कामों के लिये सभी लोग बहुत महत्व देते हैं। जब कि दैवीपना के भाव को टिकाने के लिये दूसरा कोई रास्ता नहीं है। आज के समय में संध्या के समय टी.वी. चेनल वाले घर तो दोष से भरे ही रहते हैं। जिस तरह मुसलमान अपने नवाज के समय को छोडता नहीं इसी तरह हमारे आश्रित संध्या काल को कभी वीतने नदें। आपत्काल के समय मंदिर या घर से बाहर हों तो पांच मिनट भी एकाग्रचित्त होकर अष्टक का गान करके संध्या कालीन कर्म को करलेना चाहिये । हरिनाम संकीर्तन से उत्पन्न होने वाली सकारात्मक ऊर्जा संध्या के समय उत्पन्न होने वाली नकारात्मक ऊर्जा का नाश करे देती है। श्री८हरिने खूब दबाव के साथ लिखा है कि सभी भक्त नित्यप्रति संध्या के समय भगवान के मंदिर में जायें। संध्या आरती का दर्शनकरने वालों की सभी मनोकामना भगवान पूर्ण करते हैं। इसके अलावा सभी पाप से रहति होकर परम पद को प्राप्त करते हैं। संध्या आरती का शंख-घंटनाद आसुरीतत्व को नष्ट कर देतै है।

आगामी फरवरी-मार्च-२०१५ को अंक श्री नरनारायणदेव महा महोत्सव विशेषांक रुप में प्रकाशित होगा

श्री स्वामिनारायण मासिक के सभी बांचको को सहर्ष ज्ञापित किया जाता है कि प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से आगामी श्री स्वामिनारायण मासिक फरवरी-मार्च-२०१५ का अंक ''श्री नरनारायणदेव महा महोत्सव विषेशांक'' के रुप में प्रकाशित होगा । जो फरवरी तथा मार्च-२०१५ का संयुक्त अंक होगा। जिससे मार्च महीने का अंक प्रकाशित नही होगा।

प्रसादीना पत्रोनुं आयमन

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल (अमदावाद)

मूलपत्र :

''लिखावित स्वामी श्री ७ सहजानंदजी महाराज जत परमहंस मुक्तानंद स्वामी आदि समस्त परमहंस नारायण वांचजो। बीजु लिखवा कारण एम छे जे परमहंस ने वस्त्र राखवानी रीत्य अमे लखी छे ते प्रमाणे रहेवुं। दोढ रुपैयाना बे पहिरवास धोतियाना तथा सवा रुपियानी पछेडी एक तथा पांच आनानी कौपीन बे तथा अरधा रुपैयानो माथे बांध्यानो रुमाल एक तथा सवा रुपैयानी धाबली एक तथा रसोई करवा समे पेरवानो कटको एक पा (०।) रुपैयावालो तथा बे आनानुं गरणुं पाणी गारवानुं एक तथा पांच आनानी झोली एक । आवी रीत्यना मूलवालां वस्त्र नावां मागया विना कोइक गृहस्थ आपे तो लेवां पण नवां वस्त्र मांगवा नहीं अने जे मागशे ते वचन द्रोही ने गुरु द्रोही छे। अने जो मागया विना आ वस्त्र न मले तो आटलां वस्त्र प्रथम लख्युं तेवा मूलवालां छ महीनाना पहेरेला गृहस्थ पासेथी मागी लेवां अने वस्त्र राखवा ते राती मृतिकामां रंगीने राखवां पण धोलां न राखवां अने शिक्षापत्री मां कह्युं छे ते रीत्ये सर्वेने वर्तवुं । बीजु जड भरतनी पेठे निर्माणी पणे वर्तवुं तथा पदारथने विषे आसक्ति न राखवी। बीजु आ लख्युं छे ते प्रमाणे न राखे ने तेथी अधिक राखे तथा धणा मूलवालुं राखे तो तेने पंक्ति बहार करवो अने तेा हाथनी रसोई न जमवी अने एक चांद्रायण व्रत करे त्यारे तेने समी लेवो ॥ संवत् १८८४ ना प्रथम आषाढ वदी-३ ॥

विवरण : भगवान श्री स्वामिनारायण के संतो में निःस्वाद, निःस्पृह निष्काम, निर्लोभ, निर्मानी इन पांच प्रकार के व्रत करने से साक्षात् मूर्तियों केसमान है। इन प्रत्येक संतो के व्यक्तिगत इतिहास को समझें तभी संतत्व दर्शन हो सकता है। जीवों को कल्याण के मार्ग पर लेजाने का काम संतो ने किया है।

भगवान स्वयं वर्णिवेष में एकमात्र कौपीन धारण करके सम्पूर्ण भारत में करीब ७ वर्ष तक विचरण करते रहे । ठन्ढी, गर्मी, बरसात, भूख, प्यास इत्यादि का सहन केवल जीव कल्याण के लिये करते रहे । जो संत अपने आशीर्वाद मात्र से किसी को भी कुबेर बना सकते थे वे जीवन में कभी धन का स्पर्श नही करते थे। जो संत स्वल्प समय में महलों की तरह बड़े बड़े मंदिर बना सकते थे वे आसन के बाहर रहकर खुली जगह में लोगो के साथ रहते थे। इस संप्रदाय के मूल में संत है। श्रीज महाराज संतो के प्रति बहुत ही आदर प्रेम रखते थे । संत जब दर्शन करने आते और दंडवत प्रणाम करते तब श्रीहरि खड़े होकर उन संतो को गले लगाते थे। धर्मवंसी आचार्य भी इस परंपरा का अनुसरण करते है। आज भी महाराजश्री अपने वक्तव्य का आरंभ आदरणीय संत एवं.....'' प्यारे ऐसे सम्बोधन के साथ प्रारंभ करते है । ऐसे संतो को तैयार करने में खूब महत्व की भूमिका है। मा-बाप जिस तरह अपनी संतान को संस्कार देते है ठीक उसी तरह महाराजश्री अपने शिष्यों को संस्कार देते है। श्रीहरिने समय-समय पर प्रकरण चलाकर संतो की रीति-नीति को पवित्र किया है। अपने शिष्यों के संस्कार में कोई कमी न रहे इसके लिये बार-बार टोका कर उन्हें प्रेरित करते रहते हैं। यह पत्र उसी का उदाहरण है।

पूर्वाश्रम में राजदरबार अत्यन्त संपत्तिवाले होते हुये भी मुमुक्षुजब संत की दीक्षा लेते तब उनके निर्माणी पनानो देखकर देवता भी पैर छुलेते थे । सच्चे संतो के लक्षण भागवतादिपुराणों में मिलता है । श्रीहरि अपने संतो को पहनने के लिये दो धोती, एक उत्रीयवस्त्र, दो कौपीन एक मस्तक की पुमाल, एक कम्बल, एक पानी गारने का वस्त्र देते थे। और कहते कि संतो को इससे अधिक नही रखना

चाहिये । देश विदेश जब संतो को जाना होता तो अधिक नही मात्र दो-तीन संतो की जोडी भेजते । बड़े संत भी इसी तरह रहते थे । गाँव-गाँव में घूमकर सत्संग का प्रचार करते । श्रीहरि का सामान्य सिद्धान्त यह था कि आवश्यकता से अधिक संग्रह नही करना चाहिये । इसी के परिणाम स्वरुप आज हम सभी सुखी है ।

इसके अलांवा श्रीहरि स्पष्टता करते हुये लिखते है किसी भी वस्तु की कीमत सामान्य रखनी चाहिये । आज से करीब १८५ वर्ष पूर्व श्रीहरिने प्रत्येक वस्तु का विवरण समझाये है । उसी के अनुसार सभीको विवेक बुद्धि रखनी चाहिये । संतो को निर्मानीपणा के साथ रहना चाहिये । संतो को ऐसा वस्त्र पहनना चाहिये जो उन्हे शोभा दे । आज सम्पूर्णजगत फैसन-मेचींग का हो गया है । फिर भी यदि महाराज की आज्ञा का पालन करेंगे तो जीवन सुखिया होगा । यह मन में भाव रखना चाहिये कि हमारे फैसन के डिजाईनर तो स्वयं श्रीहरि हैं । ऐसा भाव रहने से महाराज के सिद्धान्त को बल मिलेगा ।

इसके अलांवा निर्मानीपना में और भी विशेष विचार व्यक्त करते हुए लिखवाते है कि वस्त्र मांग कर नही लेना । गृहस्थ स्वयं दे तभी लेना अन्यथा मांगना नही । यहाँ पर सभी गृहस्थों का पवित्र कर्तव्य बनता है कि संतो को वस्त्र स्वयं दे । संतो को तो अवश्य देने से महाराजकी आज्ञा का पालन होगा । संत याचक बने यह ठीक नही । श्रीजी महाराजने जो कुछ संपत्ति हमे दिये है वह मात्र पेट भरने मात्र के लिये नही दी है । उस सम्पत्ति में से संतो को देकर उन्हें संतुष्ट करके ही भोगने की वात की है । इससे अक्षय पुण्य की प्राप्ति होगी । ऐसा करने से स्वयं श्रीहरि को प्राप्त होता है । व्यवहार में भी गृहस्थ बालक को जब हम कोई वस्तु देत हैं तो उस बात का पिता उसे ध्यान में रखता है । इसी तरह धर्मवंशी आचार्य से संत की दीक्षा प्राप्त किये हुये संत भी श्रीहरि के कुटुम्बी तो है । ऐसा सदा समझना चाहिये । इसके बाद संतो के प्रति छूट कराते हुये लिखवाते है कि यदि कदाचित विना मांगे वस्त्र न मिले तो गृहस्थ से मांगके लेना । लेकिन छ महीने तक जिस वस्त्र को गृहस्थ पहना हो उसे मांगे । जो संत घर परिवार, धंधा-व्यापार करके नौकर चाकर, गृहस्थी के सारे सुख को छोड़कर संत हो गये हैं, ऐसे संत किसी गृहस्थ से छ महीने पहने हुये कपड़े मांगे तो इससे बड़ा निर्मानी पना क्या हो सकता है । यह निर्मानीपना की पराकाष्ठा है ऐसे संतो को कोटि कोटि वंदन । अपने इष्टदेव के वचन का पालन करने के लिये, आज्ञा का पालन करने के लिये आत्मसर्पमण कर दिया है । इस तरह का वर्तन गृहस्थ लोग एक महीने करके देंखे कि वे कर सकते हैं क्या ? श्रीहरि के संत अकिंचन वृत्ति रखते हैं । आज के परिवेश में भले मंदिर निर्माण के लिये धनएकत्रित करना हो या व्यवस्थापन करना हो वह अलग बात है । लेकिन स्वयं के लिये वस्त्रादि को मांगकर ही काम चलाते हैं। व्यवहार में एक उक्ति है कि - मांगन से मरना भला । निर्मानीपना की इन मूर्तियो ने श्रीजी को प्रसन्न करने के लिये संप्रदाय की परम्परा से अलग होकर वर्तन नहीं किया । संत जिन वस्त्रों को पहने वे गेरुआ में रंग पर हने । किनारीवाला या जरीवाला वस्त्र नहीं पहनना । आज भी बड़े संत सिला हुआ वस्त्र नहीं पहनते । सामान्य वस्त्रों से ही संतो की प्रतिभा बढती है । गृहस्थ को जो दूषणरुप है वही संतो के लिये भूषणरुप है । आज की दुनिया में पहनावा के ऊपर लोग लाखों रुपये खर्च कर दे रहे हैं । संतो के लिये श्रीहरि स्वयं रंग पसंद किये थे वह भगवा रंग, यह रंग दुनिया में मार्गदर्शन करता है । संप्रदाय में जब तक मुमुक्षु पार्षद के रुप में रहता है तब तक वह श्वेत वस्त्र में रहता है । जब वही महाराज श्री द्वारा संत की दीक्षा ले लेता है तब भगवा वस्त्रधारण कर लेता है । कोई स्वयं भगवा वस्त्र धारण करले तो वह संत नहीं हो सकता । उसे तो धर्मवंशी आचार्य से दीक्षा लेकर संप्रदाय के परम्परानुसार वह संत कहा जाता है ।

श्रीहरि लिखवाते हैं कि सभी को शिक्षापत्री के अनुसार वर्तन करना चाहिये । गृहस्थो को यह विशेष ध्यान रखने की वात है कि केवल संतो के लिये ही यह आज्ञा नहीं है बल्कि सभी के लिये है । महाराज की आज्ञा का सर्वदा ध्यान रखना चाहिये । अंग प्रदर्शन करने वाले वस्त्र को नही पहनना चाहिये । इस विषय पर भी महाराज की आज्ञा का सदा ध्यान रखना चाहिये । महाराज की आज्ञा कापालन करने से सभी प्रकार से रक्षा होती है । शिक्षापत्री श्लोक-१६१ के अनुसार स्त्रियों को शरीर को ढंक कर रखना चाहिये । १६२ श्लो. के अनुसार पति परदेश में हो तो छोटा वस्त्र न पहने । विधवा बहने भी १६९ श्लोक के अनुसार वस्त्र का परिधान करें । वस्त्र परिधान के लिये बहुत सारे नियम महाराजने शिक्षापत्री के माध्यम से समझाया है ।

आज के युग में इन सभी आज्ञाओं का पालन बहुत आवश्यक है । शिक्षापत्री महाराजने सं. १८८२ में लिखी थी उसके बाद सं. १८८४ में पह पत्र लिखकर हम सभी को आज्ञा दिये है कि इस पत्र के अनुसार ही सभी लोग वर्तन करें । वस्त्र परिधान की छूट कहीं नही की है । हमापी अपनी जाति, परम्परा को ध्यान रखकर वस्त्र परिधान के लिये महाराजने आज्ञा की है । इसी में महाराजकी प्रसन्नता छिपी हुई है ।

इस जमाने में बहुत सारे लोग ऐसा मानते है कि यह तो पुरानी परम्परा है । इससे श्रीहरि लिखवाते है कि जड भहरत की तरह निर्मानीभाव से वर्तन करना चाहिये । मनुष्य की आयु आज के युग में ७० वर्ष है । जब तक जीवन रहेगा तब तक लोग टीका करने वाले हैं । टीका करने की सहनशक्ति जिसमें आ गयी वह निश्चित मोक्षाधिकारी हो जायेगा । यह वात चिन्तनीय है । जडभरत की तरह वर्तन करने से टीका सहन करने की शक्ति मिलती है । वचनामृत में भी श्रीहरिने जडभरत का चमत्कारिक उल्लेख किया है । भरतजी चक्रवर्ती राजा थे फिर भी सबकुछ छोड़कर तपस्या करने जंगल में चले गये । हजारों वर्ष तक तपस्या करने के बाद भी आत्यंतिक कल्याण नहीं मिला कान्तर में जड़भरत देह को प्राप्ति किये । लेकिन अन्तर में भगवान के प्रति अखंड वृत्ति रखकर जीवन सफल किया । वर्णी के रुप में स्वयं रहकर वैराग्य जैसा जीवन जीते हुये सभी को ऐसा कहने का बोधदिया । श्रीजी महाराज की उपासना देखकर राजा महाराज उनके वश में हो जाते थे । पहनावा का यह परिणाम है ।

अंत में श्रीहरि संतो के लिये लिखते है कि किसी विषय - पदार्थ में आसक्ति नही रखनी चाहिये । चाहे कितना भी सुंदर पदार्थ हो उसकी संतो के लिये कोई कीमत नही है । उसमें थोडी भी आसक्ति रखता है तो बंधन का कारण बनता है । आज भी बडे संत उन आज्ञाओं का पालन करते हैं । एक उदाहरण के रुप में - प.पू. बड़े महाराजश्री श्री स्वामिनारायण म्युजमय का निर्माण किये बाद में उसमें श्रीजी महाराज के प्रसादी की वस्तुओं का संग्रह करने के लिये गाँव-गाँव, घर-घर संत-भक्तों के यहाँ पदार्पण करके उन प्रसादी की वस्तुओं की मांग की, जिन वस्तुओं को लोग हृदय से मानते थे उन सभी प्रसादी की वस्तुओं को प.पू. बड़े महाराजश्री की एक आज्ञापर भेंट कर दिये । वे सभी देने वाले धन्यवाद के पात्र हैं । इसलिये सभी श्रीहरि के अपर स्वरुप का माहात्म्य समझते हैं । अन्त में श्रीहरि लिखवाते हैं कि - आवश्यकता से अधिक जो वस्तु रखता है या मूल्यवान वस्तु रखता है । उसे पंक्ति के बाहर कर देना चाहिये या एक पंक्ति में भोजनादिक व्यवहार बंद कर देना चाहिये । उनके द्वारा निर्मित रसोई नही खानी चाहिये । यह महाराज की शुद्धता की चरमसीमा है । संत बनाते है तभी भगवान का भोग लगता है । इसीलिये श्रीहरि कहते है कि जो हमारा नहीं है उसका प्रसाद भी मै ग्रहण नही करता । फिर भी कलियुग का ध्यान रखकर कहते हैं कि कदाचित इस आज्ञा का पालन न हो रहा हो तो उसे एक चांद्रायण व्रत करना चाहिये । यह समझने लायक है कि इस पत्र के आधार पर परिधान का नियम मात्र संतो के लिये नहीं बताया गया है बल्कि गृहस्थो के लिये भी है । गृहस्थ को शिक्षापत्री के अनुसार आज्ञा का पालन करना चाहिये । जो ऐसा नही करता उसे चांद्रायणादि व्रत करना चाहिये । पहले के जमाने में पत्र छोटे होते थे लेकिन हार्द बड़ा होता था । इस पत्र के माध्यम से श्रीहरि की आज्ञा प्रत्येक क्षण विचार कर पालन करने में जीवन की सफलता है । आज से करीब १८५ वर्ष पूर्व श्रीहरि ने इस आज्ञापत्र को लिखवाया था । जो श्री स्वामिनारायण म्युजियम के हाल नं. २ में हरिभक्तों के दर्शनार्थ रखा गया है । सभी हरिभक्त उस पत्र का दर्शन करके आज्ञा कापालन करेंगे तो महाराज की कृपा के पात्र होंगे ।

संप्रदाय का गौरव

ऊँझा श्री स्वामिनारायण मंदिर के कोठारी प.भ. गोविंदभाई पटेल के पुत्र श्री सतीषभाई के चि. रामकृष्ण को गुजरात की मुख्यमंत्री श्रीमती आनंदीबहन पटेल के वरद् हाथों **Top Exporter Gold Trophy 2012-13 in Midium Enterprise** के एवोर्ड से सन्मानित किया गया है । जो सत्संगी के रुप में संप्रदाय के गौरव रुप है । प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री ने उनकी उत्तरोत्तर प्रगति के लिये अन्त:करणपूर्वक आशीर्वाद दिये है ।

प.पू. लालजी महाराजश्री की अमृतवाणी

संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा
(हीरावाडी-बापुनगर)

एप्रोच (बापुनगर) मंदिर द्वारा आयोजित सत्संग सभा नागजीभाई शींगाला की वाडी (कुबडथल पाटिया) ता. १९-९-१४ उत्सवों के उपलक्ष्य में सभाये हो रही है। धून कीर्तन तथा अन्य बहुत सारी सामाजिक सेवाओं की प्रवृत्तियां चल रही है। स्वामिनारायण नाम बहुत सारे लोग लेते हैं। परंतु वह नाम जब श्रद्धाभाव से लिया जाय तभी महाराज प्रसन्न होते हैं। कोई भी कार्य करें एकाग्रचित्त होकर करें तो निश्चित सफलता मिलेगी। भगवान की कथा भी बहुत सारे लोग सुनते हैं लेकिन सुनने के बाद उस कथा को कितना उतारते है वह महत्व की बात है।

आज विशेष आनंद इसलिये हुआ है कि ऐसे शांत सुन्दर वातावरण में सभा का आयोजन हुआ है। हम जो भी उत्सव करते हैं वह किसी व्यक्ति के लाभार्थ नहीं करते बल्कि महाराज को मध्य (ध्यान) में रखकर करते हैं। श्रीनरनारायणदेव को प्रसन्न करने के लिये करते हैं। इसलिये आगामी उत्सवो को हम सभी मिलकर तन-मन-धन से सेवा करेंगे तो निश्चित ही उत्सव अच्छी तरह होगा। महाराज आप सभी को आधिक से अधिक भजन-भक्ति करने की शक्ति दें तथा आप सभी की हर तरह से उन्नति हो ऐसी श्री नरनारायणदेव के चरणों प्रार्थना।

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

स्वस्ति श्री गुजरात देश महाशुभं स्थाने पुज्य रादे सर्व शुभ उपमा लायक परमहंस आनंदानंद स्वामि एतान श्री अन्य देश थी लिखावित स्वामिश्री सहजानंदजीना नारायण वांचजो, बीजु लिखाव्याकरण ए छे जे भट्ट दीनानाथ पासे ग्रंथ करावो छे तेमा झूढ स्त्री, मद्य-मांसादिकनो खंडन करवो तथा भांग आदिक केफ नो खंडन करवो ने रेणी क्रियानो प्रतिपादन करवो ने जेम एकादश मां संतना बतिस लक्षण कह्या छे एवी रीते संतना सद्गुण नो विस्तार वकरवो, एवी जातनो ग्रन्थ करवो ते निमित्तना रुपिया ४०० देवा तेनो पत्र भट्ट दीनानाथ ऊपर लिख्यो छे. माटे तमो ठवका माणसने दीनानाथ पासे मोकलजो ते माणसने मुख जमवा कहेजो. ते गाम ब्रताल्य आवे तो जुकीत करीने लावे तो ठीक छे। ने एम करता व्रताल्य नहीं आवे तो अत्र थी परमहंस मोकलिये. ते परमहंसना नाम दीनानाथ ने पूछता आवे तेने अत्रथी प्रकरणनो भाव नो कालग मोकली देपिये, माटे दीनानाथ आवे तो चाकरी सारे पीठे रखावजो ने अमोने ताकीदे खबर करज्यो ने एक करता व्रताल्य आवे नही कहेजे, अत्र परमहंसने मोकलवो तो पाछो जवा तरत पहुंचावजो लिखितं - दासानुदास लांबाना साष्टांग दंडवत वांजतो.

बीजु भट्ट दीनानाथ ऊपर पत्र लख्यों छे ते कागल बीडो जे ते कागड तपासी जो जो। ने कागड फरी लखववो घटे तो ए कागड प्रमाणे बीजो पत्र अमारा काम लखावजो, सम्वत १८७३ ना श्रावण सुदी-३ (श्री स्वामिनारायण म्युजियम के हाल नं. ९ में यह पत्र दर्शनार्थ रखा गया है।)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम चतुर्थ स्थापना दिन

आगामी ता. २१-२-२०१५ फाल्गुन शुक्ल-३ (श्री नरनारायणदेव का पाटोत्सव) को श्री स्वामिनारायण म्युजियम चतुर्थ स्थापना दिन के निमित्त समग्र धर्मकुल के सानिध्य में रु। ११,०००/- तथा सहयजमान रु। ५,०००/- भरकर श्री स्वामिनारायण म्युजियम के कार्यालय में आप अपना नाम सर्व प्रथम लिखवाकर लाभ ले सकते हैं।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि डिसम्बर-२०१४

रु.।६०,०००/-	प.भ. महेशभाई एस. पटेल लालोडावाला - वर्तमान - वापी
रु.।५१,०००/-	प.भ. कान्तिभाई न्युजिलेन्ड कृते रंजनबहन पटेल
रु.।५०,५००/-	श्रीमती सर्मीलाबहन कांतिलाल खीमाणी
रु.।४२,०००/-	पायल ज्वेलर्स - कलोल
रु.।१५,०००/-	प.भ. कालीदासभाई बाडाभाई बीलोरा कृते गोविंदभाई तथा किरणभाई।
रु.।११,१११/-	प.पू. बड़े महाराजश्री कृते जयशंकरभाई (सम्राट नमकीन)
रु.।११,०००/-	अ.नि. जटाशंकर पोपटलाल शाह - अमदावाद - कृते जगदीशभाई सेमीन्टटोनिक्सवाला
रु.।११,०००/-	प.भ. नरेन्द्रभाई ए. ठक्कर चि. इसानी के विवाह प्रसंग पर कृते दर्श,
रु.।५१,०००/-	अ.नि. शंकरदास नारायणदास पटेल कोठावाला
रु.।५१,०००/-	प.भ. वासुदेवभाई लवजीभाई पटेल नारणपुरा चि. मौलेश डी. पटेल (ई.एस.ए.)
रु.।५१,०००/-	प.भ. जयेन्द्रभाई चुनीभाई सोनी - अमदावाद
रु.।५,००५/-	प.भ. कान्तिलाल मावजीभाई खीमाणी कृतेनेहा तथा शैली कान्तीलाल खीमाणी कृते बोस्ट (युके)
रु.।५,०००/-	सां.यो. सामबाई खीमजी गाम नारणपर उपलोवास (कच्छ)

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि (डिसम्बर-२०१४)

ता. ६-१२-१४	सनत दर्पेशकुमार पटेल (न्युजर्सी) कृते लीलाबहन प्रहलादभाई पटेल
ता. ७-१२-१४	राजेन्द्रभाई डी. भावसार (डोरा) वर्तमान मौलिक
ता. ८-१२-१४	अंकित महेशबाई ठक्कर के विवाह प्रसंग पर (कृते सुमित्राबहन, उत्कर्ष-वर्तमान न्युजीलेन्ड)
ता. ९-१२-१४	आनंदप्रसाद छोटालाल राव (नारणफुरा)
ता. १८-१२-१४	वीणाबहन हीराणी तथा प्रीतिबहन तथा भाविशा बहन (लंदन)
ता. २०-१२-१४	सुदेशभाई नारणदास पटेल (यु.एस.ए.)
ता. २१-१२-१४	देवसी कानजी केराई (मांडवी-कच्छ) कृते रीकीन केराई तता आशीष केराई
ता. २५-१२-१४	प्रातः देवप्रिया - उदय - गोरसिया दोपहरः नानजी रामजी हिराणी (लंडन)
ता. २९-१२-१४	अ.नि. हीरजीभाई भूडिया (फोटणी-कच्छ) कृते भानुबहन, निमेष, दिनेश, भूपेन्द्र)
ता. ३०-१२-१४	जशुभा जयदेवभाई ब्रह्मभट्ट (डेट्रोईट-यु.एस.ए.) २५ वी एनिवर्सी के निमित्त कृते डॉ. मनोजभाई, राजेश्वरीबहन
ता. ३१-१२-१४	निलेशभाई - कोलोनिया (यु.एस.ए.)

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिखवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

चुटकी बजाने के साथ

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

भुज में सुन्दरभाई सुथार के मित्र रवजीभाई अच्छे सत्संगी थे। उनका घर काला तलाव था। परंतु व्यापार करने के लिये भुज गये थे। श्रीजी महाराजने उन्हे स्वप्न दिखाया और कहा कि जिस को जब चाहोगे तब समाधिलग जायेगी। आप की इच्छा के अनुसार ही लोग स्वर्गपुरी, यमपुरी तथा मोक्ष को प्राप्त करेंगे, इस तरह आप सत्संग करवाइये। लेकिन सावधान रहियेगा कि नास्तिक पापियों के हृदय में प्रवेश मत कीजियेगा। आपके ऐश्वर्य को जानकर मुमुक्षुलोग बुलायेंगे। घर बुलाकर पूजा करेंगे। अच्छा से अच्छा भोजन करायेंगे ये सब आप स्वीकार मत कीजियेगा। अच्छा महाराज ! उन्होंने ने हां कर दिया। आपकी आज्ञा का हम अवश्य पालन करेंगे। स्वामिनारायण भगवान भुज से जाने की तैयारी करते हैं।

अब रवजीभाई भुज में तथा भुज के अगल बगल के गाँवो में तथा अपने गाँव में घूम आये। सभी को ऐश्वर्य बताते, सभी को समाधिकराते। अब सभी लोग उन्हे मानने लगे, सम्मान की दृष्टि से देखने लगे। संसार तो चमत्कार देखता है, वास्तविकता की तरफ किसी का ध्यान नहीं रहता। रवजीभाई समाधिकराते तो लोग उनका स्वागत - सत्कार करते अरे.... रवजीभाई आपको यह सिद्धि कहाँ से मिल गयी।

रवजीभाई किसी को समाधिमें वैकुंठ बताते, किसी को स्वर्ग बताते, कोई खराब रास्ते चलता तो उसे यमपुरी दिखाते। अब उनकी इस प्रकार की क्रिया देखकर लोग पूजा करने लगे। उन्हें कोई चन्दन चढाता तो कोई हार पहनाता, कोई नैवेद्य लगाता। प्रातः होते ही उनेक यहाँ लोगों की लाईन लग जाती कोई उन्हें धीमी आंच में ताजी गायके दूधको केसर, बदाम, इलायची, पीस्ता इत्यादि डालकर पकाया हुआ दूधपिलाता।

दोपहर हो तब वे घर आते चमकती धोती पहनते। भक्तों के घर जाते वहाँ उनके भक्त भावपूर्वक भोजन कराते। कोई मालपूआ बनाता, कोई जलेबी बनाता इस तरह नाना प्रकार के व्यंजन का उन्हें भोग लगता। भोज्य पदार्थ को लक्ष् यमें रखकर शाग को तथा दाल-भात को लवंग तज से घीमे वघार कर भोजन करते और वहीं आराम करते।

चार बजते ही जब वे आराम करके उठते तो मेवा मिठाई, फल इत्यादि आता। सायंकाल माखन तथा खिचडी चटनी एवं पकौडी इत्यादि व्यंजन आता। रवजीभाई की पूजा होने लगी वे अपना लक्ष्य भूल गये। समझने लायक वात तो यह है कि व्यक्ति जब अपने ध्येय को भूल जाता है तब उसकी क्या हालत होती है।

एक भाई रास्ते में दोडते जा रहा था। उसके हाथ में थैली थी। कोई उससे पूछा भाई कहां जा रहे हो ? अभी निश्चित नहीं किया हूँ। तो दौड़ते क्यो जा रहे हो ? देखता हूँ जो रास्ता खाली होगा उस तरफ घूम जाऊँगा। यह तो पागल हो गया है। कोई भी व्यक्ति हो जब वह घर से निकलता हो तो उसका लक्ष्य होता है, एक ध्येय होता है वह कहाँ और क्यों जा रहा है। इसी तरह रवजीभाई अपने ध्येय को भूल गये। स्वामिनारायण भगवान उन्हें ऐश्वर्य प्रदान किये है वह क्यों दिये है ? इसका ध्यान रखना चाहिये। स्वामिनारयण भगवान का कार्य भूलकर जो व्यक्ति स्वयं अपने ढंग से आगे बढता है तो वह ध्येय भूला कहा जायेगा। यह बात बहुत ध्यान से विचारने लायक है। हम सभी स्वयं सेवक हैं। जिससे जितना हो सके उसे भगवान श्री स्वामिनारायण का काम करना है। छोटा से छोटा चपरासी हो, क्लार्क हो, आफिसर हो, इन सभी को अपने कर्तव्य का पालन तो करना ही होगा।

इन सभी को सरकार का काम तो करना है। इसी तरह हमें भी चपरासी या क्लार्क या अधिकारी के समान सत्संगी मात्र को, हम सभी को भगवान श्री स्वामिनारायण की सेवा करनी है। यह अपना ध्येय होना चाहिये। परमात्मा को भूलकर मनुष्य जब स्वयं को कुछ मानने लगता है तब वही सब से बड़ी भूल होती है। रवजीभाई ने यहाँ पर सब से बड़ी भूल की थी। मानो स्वयं वे एक पंथ चलाने लगे। स्वामिनारायण भगवान जानते थे, अन्तर्यामी थे। वे

जानना चाहते थे कि सत्संगी में जागरुकता है या नहीं ? जब ऐसा होने लगे तो किसी सत्संगी को जागना पडेगा ही । इसी अवसर पर सुंदरजीभाई जाग खड़े हुये ।

रवजीभाई की इस तरह की विपरीत स्थिति देखर सुंदरभाई जागे । स्वामिनारायण भगवान को सिकायत किये । महाराज ! इस रवजीभाई को आपने ऐश्वर्य दिया लेकिन वे आपका काम नही करते, अपना ही काम करते हैं । वाह.. वाह.... स्वयं की कराते हैं । अपनी जय-जयकार करवात हैं । आप को तो भूल ही गये हैं । श्रीजी महाराज को हुआ कि एक सत्संगी जागा तो सही । श्रीजी महाराजने चुटकी बजाई कि रवजीभई का ऐश्वर्य गायब हो गया । अब वे किसी से कहते कि लो मैं आपको समाधिकराता हूँ लेकिन अब समाधिनही होती । धीरे-धीरे सभी लोग इस बात को जानने लगे । रवजीभाई व्याकुल हो गये । एक चुटकी में उनकी पूरी लीला खत्म हो गयी । रवजीभाई का कोई अस्तित्व ही नहीं रहा । इसीतरह जो श्रीजी महाराज की आज्ञा का लोप करेगा तो भगवान की कृपा से वंचित हो जायेगा ।

यह वात वांचकर चिंतन कीजियेगा । यह वात रवजीभाई तक सीमित नहीं है । अपने जीवन के साथ भी तुलना कीजियेगा । अपनी भूल का ख्याल आयेगा । हम भी रवजीभाई की तरह ध्येय तो नहीं भूल रहे है ? सावधान !! चैतन्य रहियेगा अन्यथा थोड़ा ही समय लगेगा । कितना ? मात्र एक चुटकी बजाने का समय ।

●

जाग्गो भाई जाग्गो

(साधु श्री रंगदास - गांधीनगर)

प्रबोधिनी एकादशी के दिन प्रभु ने निद्रा का त्याग करके देवों को दर्शन दिया । प्रभु का दर्शन करने से देवताओं को अवर्णनीय आनंद मिला । इसी लिये इस एकादशी को देव दीपावली कहते हैं ।

एकादशी से पूर्णिमा तक पांच दिन में भगवान का पूजन-दर्शन किया इसके बाद भगवान की आज्ञा लेकर सभी देव अपने कार्य में व्यवस्थित हो गये ।

प्रत्येक पर्वों के पीछे कुछ न कुछ रहस्य छिपा रहता है । इस देव दीपावली के विषय में भी रहस्य का विचार कर महर्षियों ने मनुष्यों से कहा और विशेष तो भगवद् भक्तो के लिये ।

सभी आज्ञाओं की तरह यह आज्ञा भी स्वीकार की गई । उन दिनो में बड़े-बड़े उत्सव मनाये गये । मंदिरो में पूरी रात उत्सव होने लगे । गन्ना, मूली, भंटा इत्यादि को भगवान के सामने रखकर आरती होने लगी । यह उत्सव भी अन्य उत्सव की तरह मनाया जाने लगा । लेकिन कोई भी उस उत्सव को विशेष रुप से ध्यान में नही लिया । आज से भगवान ने निद्रा का त्याग किया । इस वात से मनुष्य कब जानेगा ? मनुष्य को जगाने के लिये, सोते हुये को जगाने के लिये एक भक्तने कितना प्रयत्न किया था । उस को जानने के लिये तथा देवदीपावली के रहस्य को समझने के लिये इस वात को दृष्टांत के रुप में वांचे ।

काशी से थोडी दूर एक गाँव में एक वृद्ध ब्राह्मण रहता था । वह चुस्त धर्मवाला था । कर्मकांडी ब्राह्मण था । शारीरिक लक्षणों से वह जान लिया कि हमारी आयु अब थोडी रह गयी है । इसलिये काशी में शरीर छूटे तो मोक्ष मिले । इस वात को पुत्रों से कहा ।

पुत्र उन्हें पालकी में बैठाकर काशी के मार्ग मे चले । रास्ते में प्यास लगी । अन्यत्र कही से पानी नही मिला तो जैसे तैसे करके पानी की तृषा शान्त किये । तृषा शान्त तो हो गयी लेकिन शरीर छूट गयी । आत्मा शरीर से निकल गयी ।

अपवित्र हाथ से अपवित्र पानी पीने से सद्गति तो नहीं हुई लेकिन ''यं यं चापि स्मरन् भावं त्यजन्त्यन्ते कलेवरम्'' इस न्याय से अंत्तकल में काशी रहने का संकल्प होने से काशी में रहने वाले किसी हरिजन के घर में उनका जन्म हुआ । पूर्व के पुण्य बल के कारण इस जन्म में पूर्वजन्म का स्मरण बना रहा ।

उनके पिता काशी में रात जगने का काम करते थे, ''जगते रहिये'' इस तरह की आवाज देते हुये सूनसान गलियो में घूमते रहते ।

समय वीतते देर नहीं, युवान पुत्र को क्या काम देना चाहिये इस चिन्ता में थे संयोगवश दो दिन के बाहर गाँव जाना पडा । रात जगने का काम अनपे पुत्र को देकर वे बाहर गाँव गये ।

पूर्व धार्मिक और संस्कारी होने से वह युवान पिताकी ड्युटी बजाने के लिये हाजर तो हो गया, लेकिन मन में विचार करने लगा कि रात्रि में सभी को जगाने का एक ही मतलब है वह यह कि लोगो के धन-वस्तु की रक्षा होसके । अरेरे ? नाशवंत वस्तु का रक्षण क्यों ? नाशवंत वस्तु के रक्षण में भय है । इन नाशवंत वस्तुओं को पाने भय और रक्षण में भय । प्राप्त

करके घर में रखने में भय इन नाशवंत चीजों के पीछे प्रयत्न करने की क्या जरुरत । सुखप्रदं तथा शाश्वत वस्तुओं के रक्षण के लिये प्रयत्न करना योग्य गिना जायेगा । इसलिये आज इन सोने वालो को ऐसा जगायेगे कि अपने अमूल्य संपत्ति के रक्षण की तरफ प्रेरित हो । ऐसा विचार करके जोर की आवाज निकालता है ।

काम क्रोधो लोभ मोहो, देहे तिष्ठन्ति तत्स्कराः ।
ज्ञानरत्नापहाराय तस्मात् जागृहि जागृहि ॥

यह सुनकर सोने वाले जगकर विचार करने लगे कि आज रात में जगाने वाला इतना पवित्र शब्द (उपदेश) बोल रहा है, इतने में पुनः आवाज आई ।

ऐश्वर्य स्वप्न सदृशं यौवनं कुसुमोपभम् ।
क्षणिकं चल आयुष्यं तस्मात् जागृहि जागृहि ॥
जन्म दुःखं जरादुःखं जायादुःखं पुनः पुनः ।
अन्तकाले महादुःखं तस्मात् जागृहि जागृहि ॥
आशायां बध्यते लोकः कर्मणा परिबध्यते ।
आयुःक्षेयं न जानाति तस्मात् जागृहि जागृहि ॥

प्रत्येग गली में घूमकर इस तरह आवाज करने लगा । शांति रात्रि में उस तरह की आवाज लोगो के हृदय तक पहुंची । कितने लोग सत्य-असत्य नाशवंत पदार्थ तथा दिव्य शक्ति तथा वैराग्य को पहचानने वाले हो गये । स्वयं काशीराज को भी यह शब्द असर कर गया । जैसे राज्य की लालसा के ऊपर प्रहार हो गया हो ।

दूसरे दिन राजा का आदेश होने से राजा के सिपाही उस हरिजन बालक को पकडकर राजा के सामने हाजिर किये । राजाने पूछा कि इस तरह बोल कर रात्रि जागरण कराने का क्या कारण है ।

उस बालक ने कहा कि 'हे राजन् ! मेरे पिताजी बाहर गये है, तथा इस काम को करने के लिये हमें कहे है । संयोगवश कल प्रबोधिनी एकादशी थी । देवदीपावली थी । आत्माब्रह्म है । दिव्य है । उसे मोह निद्रा में से जाग्रत करने को ही देवदीपावली कहते हैं । राजन् ! हमें विचार आया कि शारीरिक निद्रा निद्रा नही है । लेकिन मोह ही निद्रा है । उसी में जीव लीन हो जाता है । इसके बाद काम-क्रोध-इत्यादि चोर आत्मा के सच्चे द्रव्य को जो शाश्वतसंपत्ति है ज्ञान-वैराग्यादि उसे लूट लेते हैं । मोह निद्रा में पड़ा हुआ मनुष्य जागते हुये भी वह सोता रहता है । ऐसा मनुष्य हित-अनहित नही देखपाता । वह मित्रो को छलता है और शत्रुओं का सन्मान करता है । वह धर्म रुप सुवर्ण को छोडकर अधर्मरुप कचड़े को घर में (हृदय में डालता है । सत्संगरुप अमृत का त्याग करके कुसंग रुप जहर का पान करता है । परिणामस्वरुप वह मोह के वशीभूत होकर मोक्षरुप जीव से वंचित होकर नरकरुपी मृत्यु का भोग बनजाता है।

हे राजन् ! आज प्रबोधिनी के पवित्र दिन मनष्यों को अज्ञानरुपी मोह से जागृत करने के लिये इस तरह की रात्रि जागरण में आवाज देता हूँ । मेरी इसवाली को सुनकर यहि कोई अधर्म के मार्ग से हटकर विषय की वासना से दूर होकर सत्कर्म करने लगेगा तो उसके लिये देव दीपावली सार्थक कही जायेगी ।

हरिजन बालक की वात सुनकर काशीराज भी विचार में पड गये । और वे अपने विषय में सोचने लगे कि मैं स्वयं मोह निद्रा में फंसा हुआ है । यथार्थरुप में यह बालक हमे जागाया है ।

मित्रो ! हमकितने भाग्यशाली है । वह इस लिये कि हमें भगवान स्वामिनारायण मिले है । इसके साथ हमें जगाने का काम उन्हीं के सन्तकर रहे हैं । जब से यह सत्संग प्रारंभ हुआ तब से मोक्ष की चिंता स्वयं स्वामिनारायण भगवान कर रहे हैं । हमें ध्यान इतना ही रखना है कि हमारे जीवन की गाडी अपने मार्ग से भटक न जाय ।

श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण विश्वमंगल गुरुकुल कलोल

श्री स्वामिनारायण विश्वमंगल गुरुकुल, कलोल ट्रस्ट के मेनेजींग ट्रस्टी तथा ट्रष्टियों की नियुक्ति की सत्ता ट्रस्ट के नियमत हेतु श्री नरनारायणदेव देश के आचार्य महाराजश्री को दी गयी है। - आज्ञाथी

श्री नरनारायणदेव देश के श्री स्वामिनारायण विद्याधाम हाथीजण का समावेश

श्री स्वामिनारायण विद्याधाम हाथीजण ट्रस्ट के ट्रस्टडीड में अनुगामी ट्रस्टी की नियुक्ति की रीती में परिवर्तन करने के लिये ता. १७-१०-२०१३ को निश्चित किया गहा है। - आज्ञाथी

भक्तिसुधा

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से "पूर्णता को प्राप्त करने हेतु सावधान रहना चाहिए"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

हम पूरा जीवन सिर्फ संसार की चर्चा करते है तथा संसार की नासवंत वस्तु को प्राप्त करने में व्यर्थ समय व्यतीत करते है। क्यों ? इस से तृप्ति तो कभी नही होने वाली। इसलिये जब तक पृथ्वी पर है जागृत रहना चाहिये। हम सब कुछ जानते है कि खाली हाथ आए है और खाली हाथ ही वापस जाना है। फिर भी हम ज्यादातर समय नाशवंत वस्तुओं को प्राप्त करने हेतु व्यर्थ गवा देते है। परंतु वास्तविक तृप्ति तो अंतर में लगाने से प्राप्त होती है । आंतिरक शांतिका अनुभव होता है । और इसीलिए अंत:करण भी शुद्ध रखना चाहिये। किशान जब खेतो में बीज बोता है तो बीज को यथायोग्य फलने-फूलने हेतु अतिरिक्त घास, पत्थर-कंकर सब कुछ निलाक देते हैं। और पुरानी फसल के मूल को साफ कर देता हैं क्योंकि वे नये बीज के फलने में अवरोधउत्पन्न करते हैं। उसी प्रकार अपने मन में श्रद्धारुपी बीज को बोना चाहिए । श्रद्धारुपी बीज के फलित होने हेतु अपने अंतर के अवगुणो को दूर करना होगा। अंतर में जो जन्मातर से गहराई में उतरे हुए अवगुणो के मूल को साफ करने में मुश्किल अवश्य होगी उसके लिये दृढ निश्चय और हिंमत की आवश्यकता पडेगी । मनरुपी जीवन को साफ करना होगा । अंत:करण रुपी आईने को इतना स्वच्छ करना होगा कि उसके माध्यम से ईश्वर का प्रतिबिंब स्पष्ट देख सके। परंतु हम नासमझ है। जो मार्ग हमारे कल्याण में अवरोधरुपी है उसे ही हम सच्चा मार्ग समझकर पूरा जीवन व्यर्थ ही दौडते रहते हैं। वास्तव में हमारा जन्म इसलिए होता है कि हम हमारे मनुष्य जीवनकाल में अवगुणों को दूर करके परमात्मा को प्राप्त करने का अहर्निस प्रयत्न करे । हमें व्यवहारिक जीवन अति प्रिय है । सामान्य जन्मदिन हो तो भी ऐसा महसुस करने लगते हैं कि मेरा ही जन्मदिन हो । और धूमधाम से मनाते भी है । परंतु हमें इस वास्तविकता का ख्याल नही रहता कि हमारे आयुष्य में से एक वर्ष कम हो गया है।

हम बचपन के दिनों को याद कते है तो कितना आनंद अनुभव करते हैं। कितने सहज थे वे दिन। प्रथम हमारा जन्म फिर बाल्यावस्था और फिर हमारा विकास होता है। जैसे-जैसे हमारे आयु में वृद्धि होती है, हम आयु के काल के अनुसार वस्तुओं को प्राप्त करते जाते है। तो फिर हमारे विकास के साथ आनंद में भी वृद्धि होनी चाहिए ना ? परंतु हमें जीवन की अवस्था में से बाल्यावस्था ही क्यों अधिक याद आती है ? क्योंकि विकास तो हुआ परंतु आनंद में वृद्धि तो हुई ही नहीं। बाल्यावस्था, युवावस्था, वृद्धावस्था इन सभी में वृद्धावस्था ही जीवन की पूर्ण अवस्था है। तो मनचाही पूर्णता क्यो प्राप्त नहीं हो पाती ! प्रत्येक व्यक्ति आजीवन मृत्यु से भागने की कोशिश करता है।

एक राजा को एक दिन अपने महल में एक माली को परछाई दिखाई दी। जिसने राजा से कहा कि, आनेवाले कल के सूर्यास्त के समय आपकी मृत्यु हो जायेगी। इसलिए राजाने पूछा कि अब मुझे क्या करना चाहिए। सभीने मंत्रियों से कहा कि आनेवाले कल सूर्यास्त तक आप यह स्थान छोडकर चले जाइए। राज्य की हद छोड दीजिए तो स्थान भी बदल जायेगा। इस कारण मृत्यु भी आपको नहीं स्पर्श कर पायेगी । परंतु राजाके एक दास ने कह दिया कि यह तो काल का चक्र है। और जो होना है वह होकर ही रहेगा। परंतु राजा स्थान छोडकर जाने को तैयार हो जाता है। राजा के पास एक वेगवान अश्व था । उसे लेकर पुत्र-पुत्री, पत्नी, राज्य सबकुछ भूलकर मृत्यु से बचने के लिए राज्य की सीमा के बाहर एक खेत में एक वृक्ष के नीचे सूर्यास्त से पहले ही पहुंच गया। और मन में हुआ कि मेरे पास तो वेगवान अश्व है तो मैं उचित समय पर उचित स्थान पर पहुंच गया। परन्तु उसी क्षण काली परच्छाईने पीछे से कंधे पर हाथ रखा। और कहा कि अच्छा किया कि उचित समय पर उचित स्थान पहुंच गये। यही अश्व आपकी मृत्यु तक पहुंचने का साधन बना है। यह कोई राजा की बात नहीं है। हम सबकी बात है। कहने का तात्पर्य यह है कि, मृत्यु से कितना भी भागा जाय फिर भी मृत्युरुपी अश्व सदैव प्रत्येक व्यक्ति के साथ होता ही है। किसी का अश्व दुर्बल होता है किसी का अश्व वेगवान होता है। परंतु सभी को उचित समय पर उचित स्थान पर पहुंचा ही देता है। हमको इन सारी बातो का ज्ञान है फिर भी हम राजा की भांति सदैव यही सोचते है कि हमारी कभी मृत्यु ही ना हो पाये । वृद्धावस्था ही ना आये। हम जो चाहे वही सबकुछ घटित हो। परंतु हमारे हाथ में कुछ भी नही है वह भी हम जानते हैं, फिर भी जीवन में संतोष नही है। एक चींटी पक्षी के पंख को घसीट कर अपने बिल तक ले जाने का प्रयास करती है। मार्ग में कंकर,

जमीन सब कुछ अवरोधउत्पन्न करते है। फिर भी मेहनत करके बिल तक ले जाती है परंतु बिल के मुख मेंउस पक्षी के पंख को नही डाल पाती उसी प्रकार हम भी मृत्यु को लौटा नही सकते। खाली हाथ आये और खाली हाथ जाना है। इन बातो का विशेषरुप से ध्यान देने से हम परमात्मा को प्राप्त कर सकते हैं। और जीवन के अंतिम दिनों में पूर्णता का अनुभव अवश्य होगा।

●

सत्संग में सावधानी

- सां.यो. कोकीलाबाई (सुरेन्द्रनगर)

श्रीजी महाराज के समर्थ मुक्तोंने सत्संग का बगीचा काफी कष्ट उठाकर फलित किया है। सत्संग के स्तंभ समान सद्गुरु आज सत्सग में अदृश्य होते जा रहे है। इसी लिए उनके प्रत्यक्ष दर्शन मुश्किल हो गये है। अभी भी कुछ ऐसे संत है जिनका सत्संग - समागम कर लेना चाहिए क्योकि सत्संग के इतिहास में है कि सत्संग समागम से ईश्वर की प्राप्ति सरल है। जिन्होने पूर्व के साधु का समागम किया होगा उनमें गुणों का अवतरण अपने आप हो जाता था। भगवद् गुण के कारण ही संसार की मोह माया का असर नही होगा। साधु के साथ रहने की इच्छा ही सत्संग के मार्ग को प्राप्त करने का मार्ग है।

गुणातीतानंद स्वामी की बातों में कहा है कि, साधुओं के नियम से अक्षरधाम की प्राप्ति होती है। इसीलिए संतो का समागम कर लेना चाहिए इसी समागम के सहारे हमे पापरुप विषय का त्याग करके अक्षरधाम में जाना है। पूर्व में बड़े बडे लोगो ने संत समागम का सुख प्राप्त किया है। फिर भी बड़े संतो को साधारण मनुष्य समान समझते है। सत्संग में आखिर तुरंत नही भागना चाहिए। मनवृत्ति को संयमित करके संतो की बातो को सुनना चाहिए, विचार करना चाहिए, तो ही यह सारी बाते हमारे अंतर में उतर पायेगी। विवाद में जाते हैं, व्यवहार के कार्यो में पर्याप्त समय देते है परंतु सत्संग के प्रति उदासीन रहते है।

श्रीजी महाराजने वचनामृत में कहा कि, ''हम प्रत्येक क्षण प्रयत्न करते है कि रज, तम के गुणों का मिश्रण न होने पाये। धर्म, ज्ञान, आदि सत्वगुण है। और रज, तम, गुण सत्व गुण से मिश्रित न होने पाये। श्रीजी महाराज के रहस्य तथा सिद्धांत के वचन हमारे जीवन में सद्गुण वर्धक है।

श्रीजी महाराज की आज्ञा का पालन करना चाहिए। श्रीजी महाराजने इस बार आसपास पर महत्व दिया। आज्ञा का पालन करने वाला, शिक्षापत्री के अनुसार आश्रित माना जाएगा। इसीलिए सत्संग में सावधानी महत्वपूर्ण है। माया का बल ऐसा होता है कि समझदार व्यक्ति भी भ्रमित हो जाता है। नियम, निश्चय का पक्ष रखनेवाला ही पूर्व सत्संगी है। इस पृथ्वी पर समय व्यतीत करते हुए हर्ष-शोक के समयकाल में धीरजता का प्रदर्शन अनिवार्य है। हमें तो साक्षात् स्वामिनारायण भगवान मिले है। इस रहस्य का बोधहोने पर कोई विघ्न का सामना नहीं करना होगा नहि तो सत्संग में द्वेष के कारण उद्वेग का आगमन होता है। महाराज के सच्चे भक्तों के सामने तो माया भी हार मान जाती है। जिसे सत्सग में आत्मबुद्धि है वह सत्य के पक्ष में है और मान-अपमान में बुद्धि रखने वाला सत्य में निष्ठा नही रख सकता।

विषम देशकाल में महाराज को नही भूलना चाहिए। किसी भी प्रकार के वैभव में भावना जागृत नही होनी चाहिए। महाप्रभु की प्राप्ति में ही श्रेष्ठ क्षण है। हमें प्रगट भगवान का स्वरुप मिला है। बस इतना ही पर्याप्त है। स्वरुप में निष्ठा का अभाव अनुचित जीवो के लिए भगवान को पहचानने हेतु उत्तम मार्ग सच्चे संत का समागम ही है। भगवान भजन के लिए उत्तम मित्र संत ही है। बाकी जब तो स्वार्थमय ही है।

सगी मा हित के लिए नीम के कडवे घूंट भी पिला देती है। उसी प्रकार साधु प्यार से हितकर मार्गदर्शन करते हैं। इसीलिए साधु का समगाम श्रेष्ठ है। परंतु श्रद्धा का अभाव है। संतो का उच्चतम मार्गदर्शन समय-समय पर प्राप्त होने मे ज्ञान में वर्धन होता है। बनीये के बच्चो को यदि कुछ हो जाता है तो सम्पूर्ण समाधान को अपना लेते है, धन का व्यर्थ व्यय करने से भी पीछे नही हटते। इस जगत के जितने भी पदार्थ है वह धर्म विरोधी है। यथार्थ सुख तो भगवान की मूर्ति में है। ईसीलिए ईश्वर को प्रसन्न रखना चाहिए।

जिसने भगवान को प्राप्त किया है उसके लिए यह सुख पारस, चिंतामणी, कल्पतरु, कामधेनु, या उससे भी अधिक प्राप्ति हुई है यह समझना चाहिए। एक गाँव में घरके सदस्य लोग अपने लडके के विवाह की बात कर रहे थे। बारात लेकर लड़के के विवा हमें जाने की बात हुई। यह बात सुनकर लडकेने पिताश्री से कहा, मुझे बारात में जाने का शौख है। मुझे भी अवश्य ले जाना। पिताने उत्तर दिया मूर्ख तेरा विवाह है तो तुझे तो लेकर ही जायेंगे न ? भला उसमें हमारा क्या काम ? उसी प्रकार प्रगट भगवान तथा सच्चे संत की पहचान से ही सबकुछ प्राप्त हो जाता है। सद्गुणो में वृद्धि अपने-आप हो जाती है। हृदय में एकांतिक के लक्षण प्राप्त करने का भाव रहता है। जिसे विषय में रुचि है उसे भगवत् भाव की लालसा नही होती। सत्संग करते हुए लोहार के जैसी स्थिति हो जाती है। लोहार एक वहाँ एक बिल्ली थी। बिल्ली उस लोहार के बरतनो के पीटने से होने वाले आवाज की आदि थी। एक दिन वह एक पटेल के घर में घुस गई। दूध, दहीं सब कुछ साफ कर दी। पटेल को मालूम पडा तो बिल्ली को निकालने के लिए पटेल थाली पिटने लगा। परंतु वह तो लोहार की बिल्ली थी। उसी प्रकार संतो के बोलने से फर्क ना पडने का कारण मनुष्य की दृढ़ता है। इसीलिए लोहार की बिल्ली की भांति आचरण नही करना चाहिए। भजन-भक्ति करनी चाहिए। आज्ञा का पालन करते हुए कथा-वार्ता को हृदय में

उतारना चाहिए। जीव में सात्विकता तथा शांति की वृद्धि करनी चाहिए। भगवान की कृपा प्राप्त करने हेतु कथा करनी चाहिए। सुमति और शांति की प्राप्ति निश्चित ही होगी।

●

शूरवीर सत्संगी

– सां.यो. कुंदनबाई गुरु सां.यो. कंचनबाई (मेड़ा)

प्यारे भक्तो ! सहजानंद के भक्त जैसा सिंह समान होना कोई खेल नही है। ब्रह्मानंद स्वामीने कीर्तन में कहा है कि, ''हरिजन साचा रे जे उरमा हिंत राखे !'' जिस में हिंत ही नही हे वह हरिभक्त नही हो सकता ? हम घर में रोशनी के लिए बिजली के बल्ब लगाते हैं। इस बल्ब की प्रक्रिया क्या है। बीजली के बल्ब में छोटे तार में फिलामेन्ट होता है। वह गरम हो जाता है और रोशनी देता है। परंतु यदि बल्ब का फिलामेन्ट उड जाये तो वैसे बल्ब का कोई प्रयोजन नही है। उसे कनेकसन के साथ चाहे जितना भी जोडो वह रोशनी नही देगा। भक्तो ऐसे उड़े हुए बल्ब जैसे लोग सच्चे सत्संगी नही हो सकते। अंदर शूरवीरता रुपी फिलामेन्ट होगा तो ज्ञानऔर सत्संग की रोसनी अपने आप ज्वलित होगी। जिसकी वाणी में, आचरण में सत्संग की सुगंधहोगी वही सच्चा शेर है। बाकी के लोग शेर का मुखौटा पहने सिंह बनने का नाटक मात्र है। मात्र ईश्वर का नाम लेने से ही सच्चे सत्संगी नही बन जाते है। युद्ध में सिपाही गोली बारी के समय यदि भय के कारण पीछे भाग जाय तो सिपाही देश को विजयश्री नही प्राप्त करा सकता। उसी प्रकार हिंमतहारा हुआ हरिभक्त सत्संग को गौरव नही प्रदान करवा सकता। भक्तों ! बहुत विचारणीय है यह सब ! आज के युग में युवकों को मस्तक पर तिलक-चंदन करने में शर्म महसूस होती है। स्त्री भक्तों के साथ भी यही भावना है उन्हें भी कुमकुम- सिंदूर लगाने में शर्म महसूस होती है। रामायण में एक प्रसंग है कि श्रीरामजी के चरण स्पर्श करने हेतु हनुमानजी जब राजमहल में जाते हैं उस समय सीतामाता मांग में सिंदूर लगा रही थी। हनुमानजी ने हाथ जोडकर पूछा ''माता सिंदूर लगाने से क्या होता है ? सीताजीने उत्तर दिया, ''श्रीरामजी प्रसन्न होते है। यदि एक चुटकी सिंदूर लगाने से रामजी प्रसन्न होत है तो व्यर्थ समय नही बिगाडना चाहिए। बाहर जाकर हनुमानजीने श्रीराम को प्रसन्न करने हेतु पूरे शरीर में ही सिंदुर का लेप लगा लिया। हनुमानजी को तब से ही सिंदूर अत्यंत प्रिय है। भक्तगण ! हमें वह बात जीव में उतारनी चाहिए कि, हनुमानजीने श्रीराम को प्रसन्न करने हेतु अपने समस्त शरीर में सिंदूर लगा लिया, तो जो सत्संगी अपने इष्टदेव को प्रसन्न करने हेतु तिलक-चंदन करने की हिंमत नही रखता वह शेर की भांति सहजानंदी भक्त कैसे कहलायेगा ? कोई यदि यह कहे कि मुझमें हिंमत तो नही है परंतु मैं चुस्त सत्संगी हूं, ये कैसे सम्भव है ? प्रात: समय में जिस सत्संग का मस्तक तिलक-चंदन के वगैर सुना हो उसे शर्म आनी चाहिए। सत्संगी भक्तो को किसी कुसंगी के कहने पर नही चलना चाहिए। शेर को कोई भी भ्रमित नही कर सकता। पालतू कुत्ते को मार्गदर्शन दिया जाता है शेर कोनही। सहजानंदी शेर बनने हेतु खुमारी चाहिए। ध्येय और सच्ची निष्ठा होनी चाहिए। सच्चा मर्द कोन है ? तो ब्रह्मानंद स्वामीने कीर्तन में कहा है कि, ''टेकन मेले रे ते मरदखरा जगमां ही''।

भक्ति, संस्कार, संत्संग आदि के पथ से कभी भ्रमित नहीं होने वाला ही सच्चा मर्द है। बाकी तो सत्संग के वेशधारी कहे जायेंगे। स्वामिनारायण भगवान की भक्ति तथा भगवान की आज्ञाका पालन करना संत - भक्तों के लिये आवश्यक है। संस्कार तथा सत्संग से विरुद्ध आचरण करने से आत्म कल्याण नहीं होता, उत्थान भी नहीं होता। सत्संग करने के लिए ''ना'' होय तो होटल में जाने के लिये, क्लब में जाने के लिये, घूमने-फिरने जाने के लिये ''ना'' क्यों नही। इसी में आत्मशक्ति समाई हुई है। सत्संगी होने के लिये खूब त्याग की जरुरत है। मात्र कंठी पहनने से कोई सत्संगी नहीं होता उसके लिये आचरण की जरुरत है। शिक्षापत्री में महाराजने जो आज्ञा की है उसके जैसा जीवन में आचरण विना किये कभी वह सत्सगी नही हो सकता, विकास भी सम्भव नही, आत्म कल्याण तो कभी संभव नही। इसलिये सत्संगी मात्र को शिक्षापत्री का अध्ययन करके सत्संगियो के लिये जो भी महाराजने आज्ञा किये है उसका पालन करना चाहिए। इसके लिये आत्मसमर्पित व्यक्तित्व होना चाहिये।

भक्तों ! सहजानंदी सिंह होना हो तो समर्पण की तैयारी रखनी पडेगी। कहाजाता है कि सिंह का टोला नही होता

''सरवे गंज सिर मोती नव निपजे,
नागे नागे मणि नव होय..... समामग संतनो।

जिन्हे सच्चे संत का सत्संग मिल गया हो वे ही वीर कहेजायेंगे। लेकिन इसके लिये सच्चे गुरु की आवश्यकता है। गुरुज्ञानी होना चाहिए।

''ज्ञान हीन गुरुनव कीजिये, संध्या गाय सेवे शुं थाय...
समागम संत नो
कहे प्रीतम ब्रह्मवेत्ता भेटना महारोग समूली जाय.....
समागम .....

जब ब्रह्मज्ञानी संत की प्राप्ति होती है तो सिंह जैसा शौर्य जीवन में प्राप्त होता है। भगवान को प्रसन्न करने की लगन लगती है। भक्तगण ! श्रीजी महाराज को भी शुरवीर भक्त अधिक प्रिय है। लोया के दूसरे वचनामृत में श्रीजी महाराजने शूरवीर भक्तो कोपास बुलाकर छाती पर चरणारविंद की छाप दिये थे। परमात्मा श्रीहरि को प्रार्थना करते है कि ऐसे संतो का योग हमें सदैव मिलता रहे तथा ऐसी खुमारी से जीने के लिये अदभुत बल प्रदान करें।

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सेक्टर-२ में १५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) में श्री नरनारायणदेव का १५ वाँ पाटोत्सव माघ-शुकलपक्ष-५ ता. २७-११-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ हाथों से षोडशोपचार महाभिषेक, अन्नकूट आदि प्रसंगो को विधिपूर्वक सम्पन्न किया गया।

मंदिर के स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमप्रकाशदासजी (छोटे) तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नाराणघाट की प्रेरणा से पाटोत्सव के यजमान प.भ. कानजीभाई लवजीभाई पटेल तथा रुखीबहन कानजीभाई पटेल (देवपुरा वर्तमान गांधीनगर) मेपाणीया परिवार ने लाभ लिया। पाटोत्सव प्रसंग पर श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून की गयी। प.पू. बड़े महाराजश्रीने पधारकर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती की।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, गांधीनगर मंदिर के महंत स्वामी, शा. राम स्वामी आदि संतोने प्रासंगिक प्रवचन किया। अंत में समस्त सभा को प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद दिये। गांधीनगर तथा आसपास के गाँवो के हजारो भक्तजनो ने पाटोत्सव के दर्शन किये।

(शा. चैतन्यस्वरुपदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर धरमपुर में स्वातमुहुर्त का आयोजन किया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता से नये धरमपुर (भुडीया) गाँव में आज से ७० वर्ष पहले अ.नि. सगु. स्वामी नारायणमुनिदासजीने मंदिर का निर्माण करवाया था। जो कि बहुत जीर्ण स्थिति में था। सत्संग की वृद्धि हेतु स्वा. हरिप्रकाशदासजी तथा स.गु. शा.स्वा. पी.पी. स्वामी (गांधीनगर महंतश्री) की प्रेरणा से ता. ९-११-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से नूतन मंदिर का भूमि पूजन विधिपूर्वक किया गया। इस प्रसंग में श्री विसलसिंह भारखुसिंह राणा तथा अ.नि. श्री धनाणी रणछोडजी राणा (जमीनदाता) ठे. पूजाणी धनाजी आदि परिवारने यमजान पद का लाभ लिया। (कोठारीश्री धरमपुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट तुलसी विवाह

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा समग्र धर्मकुल की प्रसन्नता के साथ तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा स.गु. महंत शा. स्वा. पुरुषोत्तमरकाशदासजी तथा संत मंडल (गांधीनगर) की प्रेरणा से भव्य तुलसी विवाह का आयोजन कार्तिक शुक्ल पक्ष-१५ को ता. ६-११-१४ को किया गया। जिसमें ठाकुरजी के यजमान पद का लाभ अ.सौ. अंकिताबहन प्रकाशभाई पटेल (चेतपुर), माताजी के पक्ष के यजमान पद का लाभ पटेल मंजुलाबहन दशरथभाई (वडुवाले) ने लिया। महाप्रसाद के यजमान अ.सौ. उषाबहन हिंमतभाई लक्कड तथा अ.सौ. खुश्बुबहन धर्मेन्द्रभाई लक्कड (थलतेज) थे। ठाकुरजी के मायके पक्ष के यजमान श्री नीतिनभाई कांतिलाल महाराजा मनन तथा माताजी के मामा पक्ष के यमजान टेल बिपीनभाई सोमाभाई (कुकरवाडा) आदि परिवार थे। इस प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री पधारे थे। हजारो भक्तजनोने तुलसी विवाह के दर्शन किये।

(बालु स्वामी - पूजारी)

प्रत्येक एकादशी को बोपल आंबली रोड पर घर सभा का आयोजन

श्री नरनरायणदेव के भावि आचार्य पपू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से जिस विस्तार में मंदिर नही है वहाँ घर सभा द्वारा प्रत्येक एकादशी को रात्रि में ९-०० से १०-३० तक प.भ. अर्जुनभाई संजयभाई सोनी के यहाँ सत्संग सभा का नियमित आयोजन किया जाता है। आस-पास में रहने वाले हरिभक्तों को सभा का अवश्य लाभ लेना चाहिये।

प.भ. संजयभाई आर. सोनी
२०२, अर्थ-१२, होटल लेन्ड मार्क के सामने, बोपल-आंबली रोड, अमदाबाद मो. ९८२५००८०९०

श्री स्वामिनारायण मंदिर मुबारकपुर चतुर्थ वार्षिक पाटोत्सव - शाकोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा धर्मकलु के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारणघाट) तथा स.गु. महंत शा. स्वा. छोटे पी.पी. स्वामी (गांधीनगर से-२) की प्रेरणा से तथा प.भ. पटेल कनुभाई आदरभाई, पटेल रमेशभाई नाथाभाई के यजमान पद पर श्री स्वामिनारायण सत्संग समाज मुबारकपुरा द्वारा ठाकुरजी का चतुर्थ पाटोत्सव तथा शाकोत्सव तथा अन्नकूट आरती ता. १०-११-१४ को प.पू. बड़े महाराजश्री के वरद् हाथों से सम्पूर्ण किया गया। इस प्रसंग पर संतगण पधारे थे। तथा अपनी अमृतवाणी का लाभ दिया। समस्त सभा को प.पू. बड़े महाराजश्रीने आशीर्वाद

दिये । गाँव के तमाम भक्तोंने छोटी-बड़ी सेवा करके दर्शन का लाभ दिया। (कोठारीश्री)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट शरदोत्सव मनाया गया

सर्वोपरि श्रीहरि की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा मंदिर के महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा गांधीनगर से-२ के महंत छोटे पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणघाट में भगवान श्रीहरि को प्रिय एसे अलौकिक शरदोत्सव आश्विन शुक्लपक्ष-१५ ता. ७-१०-१४ को प.पू. १०८ श्री व्रजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की शुभ उपस्थिति में मंदिर के प्रसादी के विशाल आंगन में ठाकुरजी समक्ष संत-हरिभक्तो द्वारा भव्य-रास-कीर्तन करते हुये मनाया गया अंत में सभीने दूधचिउड़ा का लाभ लिया । इस प्रसंग के मुख्य यजमान प.भ. दिनेशभाई पुरुषोत्तमदास पटेल (डांगरवा-वर्तमान अमदावाद) परिवारने लाभ लिया। (शा. अभयप्रकाशदासज)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाटमें श्रीमद् भागवत पारायण का आयोजन

सर्वावतारी श्री स्वामिनारायण भगवान की परम कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल आशीर्वाद से श्रीहरि के अलौकिक चरणो से अंकित ऐसे प्रसादीभूत श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणघाट में सर्वोपरी श्री घनश्याम महाराजश्री की छाया में पवित्र कार्तिक महीने में पितृयोके मोक्ष हेतु ता. ६-१०-१४ से ता. १-११-१४ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण का सुंदर आयोजन किया गया । महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी तथा गांधीनगर के (से-२) महंत छोटे पी.पी. स्वामी की प्रर्णा से अ.नि. प.भ. माधवलला हरजीवनदास पटेल धर्मप्तनी गं.स्व. अमयीबहन माधवलाल पटेल (चाडसणा - वर्तमान अमदावाद) परिवार की तफ से कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस प्रसंग में प.पू. बड़े महाराजश्री पधारे थे। यजमान परिवा रके पुत्रोंने प.पू. बड़े महारजाश्री का पूजन-आरती की । कथा के वक्तापद का लाभ स.गु. शा.स्वा. रामकृष्णादजी तथा शा. स्वा .अभयप्रकाशदासजी ने विया । अमदावाद मंदिर से पू. महंत स्वामी हरिकृष्णदाजी आदि संत गणोने पधारकर आशीर्वाद दिये।

(शा. दिव्यप्रकाशदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री के आशीर्वाद से श्री नरनारायणदेव महा महोत्सव के उपलक्ष में श्री नरनारायणदेव महिला मंडल कांकरिया द्वारा श्री स्वामिनारायण महामंत्र की ३५१ मिनिट की धून ५१ भक्ति चिंतामणी पाठ बहनो द्वारा श्री स्वामिनारायण मंदिर कांकरिया से अमदावाद मंदिर श्री नरनारायणदेव के तथा श्री स्वामिनारायण म्युजियम की पदयात्रा द्वारा दर्शन किये। (श्री न.ना.देव महिला मंडल, कांकरीया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिद्धपुर में सुवर्ण शताब्दी महोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से सिद्धपुर मंदिर में बिराजमान श्री धर्मदेव भक्तिमाता श्री हरिकृष्ण महाराज का सुवर्ण शताब्दी महोत्सव (१५ वाँ वार्षिक पाटोत्सव) सिद्धपुर मंदिर में मनाया गया । महंत सा.स्वा. चंद्रप्रकाशदासजी तथा समग्र संत मंडल की प्रेरणा से तथा हरिभक्तो के स्टाफ-सहकार से प्रसंग का धूमधाम से आयोजन हुआ । इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् भागवत कथा पारायण पु. स.गु. शा.पी.पी. स्वामी (जेतलपुर) तथा स.गु. शा. घनश्याम स्वामी (माणसा) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई । विष्णुयाग, ब्रह्मभोग आदि कार्यक्रम भी हुए । महोत्सव में श्रीहरि के समग्र धर्मकुल पधारकर आशीर्वाद दिये । पधारे हुए संत-मंडलने आशीर्वचन दिये । समग्र सभा संचालन शा.सवा. विजयप्रकाशदाजी तता शा. प्रेमप्रकाशदासजी ने (हिंमतनगर महंत) किया। (शा. वियप्रकाशजी - वाली)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बालवा १३ वाँ पाटोत्सव मनाया गया

श्री नरनारायणदेव पिठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के एवंस मग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से मंदिर के महंत स्वामी नंदकिशोरदासजी तथा स्वामी घनश्यामप्रकाशदाजी की प्रेरणा से मंदिर में बिराजमान सर्वोपरि श्री घनश्याम महाराज, तथा श्री राधाकृष्णदेव का १३ वाँ वार्षिक पाटोत्व १०-१०-१४ को विधिपूर्वक मनाया गया।

इस प्रसंग पर प.पू. लालजी महाराजश्री संत-पार्षद मंडल के साथ पधारे थे। उनके वरद् हाथो से ठाकुरजी का षोडशोपचार महाभिषेक वेदविधिपूर्वक सम्पन्न किया गया। प्रासंगिक सभा में अहमदावा मदिर के पू. महंत स्वामी, नारणपुरा, नारणघाट तथा कांकरिया मंदिर के पू. महंत स्वामी, नारणपुरा, नारणघाट तथा कांकरिया मंदिर के महंत स्वामीने प्रासंगिक उद्बोधन में सर्वोपरि श्री नरनारायणदेव की निष्ठा तथा धर्मकुल की आज्ञा के पालन और धर्मकुल के प्रति निष्ठा की आज्ञा की । अंत में प.पू. लालजी महाराजश्रीने समस्त सभा को आशीर्वाद दिये। सभा संचालन शा. विश्वप्रकाशदासजीने किया था। (पावन ठक्कर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बावला में बहनों की सत्संग सभा का आयोजन

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से ता. १७-१०-१४ को बावला में सुंदर सत्संग सभा का आयौजन किया गया। बावला के बहनो के आग्रह के कारण प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री सांख्ययोगी बहनो के साथ पधारी थी ।

सांख्ययोगी बहनोने सुंदर धर्म, नियम, निष्ठा, की बाते समझायी। अंत में समग्र बहनो को प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्रीने आशीर्वाद प्रदान किया। (हेतल ठक्कर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) प्रांतिज में पंचान्ह पारायण का आयोजन किया गया

श्री नरनारायमदेव पीठ के प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालश्री की आज्ञा से तथा सां. बचीबाई की प्रेरणा से बहनो के मंदिर में श्रीमद् सत्संगि भूषण - पंचान्ह पारायण सां. नर्मदाबा (जेतलपुर) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई। कथा में आनेवाले प्रत्येक प्रसंगो को सबा में मनाया गया। महिला मंडलने सुंदर सेवा की।

(महिला मंडल, प्रांतिज)

श्री नरनारायणदेव उत्सव मंडल द्वारा प्रबोधिनी एकादशी को परंपरागत उत्सव मनाया गया

सर्वोपरि श्रीहरि की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री नरनारायमदेव गादी के प्रथम आदि आचार्य प.पू. श्री अयोध्याप्रसादजी महाराजश्रीने कार्तिक शुक्लपक्ष-५ प्रबोधिनी एकादशी को रात्रि के ९-०० से प्रातः ७-०० बजे तक श्री नरनारायणदेव समक्ष श्रीजी महाराज की लीला तथा दशम स्कंधमें लिखित रासलीला का वर्णन उत्सवी मंडल द्वारा संप्रदाय के अष्ट कवि स.गु. ब्रह्मानंद स्वामी, स.गु. मुक्तानंद स्वामी तथा स.गु. प्रेमानंद स्वामी रचित कीर्तनो को प.भ. संदिपभाई भरतभाई चोकसी ने उत्सवी मंडल के साथ प्रबोधिनी एकादशी के दिन सम्पूर्ण रात्रि तक मृदंग, सितार, ढोलक के साथ गाकर उत्सव मनाया।

कारतिक शुक्लपक्ष-०१२ को प्रातः प.पू. लालजी महाराजश्रीने पार्षद मंडल के साथ उत्सव में पधारकर उत्सवी मंडल को आशीर्वदा दिये। (गोपालभाई मोदी, एडवोकेट)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बिलोदरा मूर्ति प्रतिष्ठा

श्री नरनारायणदेव पिठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकलु के आशीर्वाद से तथा स.गु. महंत स्वामी देवप्रकाशदासजी (नारणघाट) तथा स.गु. महंत छोटे पी.पी. स्वामी (गांधीनगर से-२) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर बिलोदरा में मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव धूमधाम से मनाया गया।

इस प्रसंग के उपलक्ष में स.गु .शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर) तथा शा. स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) के वक्तापद पर ता. ३१-१०-१४ से ता. ४-११-१४ तक श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण संगीत के सुमधुर ताल पर गाँव के श्रोताओने मन्त्र मुग्धहोकर संगी तका पान किया। इस प्रसंग के उपलक्ष में ठाकुरजी की नगरयात्रा, यज्ञ, अन्नकूट, सांस्कृतिक कार्यक्रम, रास-गरबा, कीर्तन भक्ति जेसे सुंदर प्रोग्राम किये गये।

समग्र गाँव के हरिभक्तोने तन, मन तथा धन से सेवा करके यजमान पद का लाभ लिया। पांच दिन तक समग्र धर्मकुल पधारकर आशीर्वाद दिये। ता. ४-११-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे पूर्ण की गयी। उसके बाद यज्ञ तथा कथा की पूर्णाहुति की गयी। क्षत्रिय दरबारो की निष्ठा अद्भूत थी।

प्रासंगिक सभा में अहमदाबाद मंदिर के महंत स्वामी, मूली मंदिर के महंत स्वामी आदि संतोने प्रेरणात्मक उद्बोधन किया। अंत में समस्त गाँव को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद देते हुए नित्य मंदिर में दर्शन के नियम दृढता से पालन हेतु आज्ञा की। समग्र प्रसंग में नारणघाट तथा गांधीनगर (से-२१ मंदिर के संतोने तथा बिलोदरा गाँव के युवक मंडलने सुंदर सेवा की।

(शा. चैतन्यस्वरुपदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनों का) बापुपुरा श्रीमद् भागवत् दशम स्कंधपारायण का आयोजन किया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से बापुपुरा गाँव की तरफ से ता. १९-११-१४ से ता. २३-११-१४ तक श्रीमद् भागवत स्कंधपंचदिनात्मक रात्रीय पारायण स.गु. शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर महंतश्री) के वक्तापद पर सम्पन्न हुई। कथा में प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री बहनो को दर्शन-आशीर्वाद प्रदान करने हेतु पधारी थी। गाँव के तमाम हरिभक्तोने सेवा करके यजमान पद का लाभ लिया। समग्र प्रसंग के मार्गदर्शक स.गु. शा. महंत छोटे पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) थे।

कथा में अहमदाबाद मंदिर के पू. महंत स्वामी, स.गु. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी (गांधीनगर से-२३), शास्वा. घनश्यामप्रकाशदासजी आदि संतोने पधारकर हरिभक्तो को उपदेशात्मक मार्गदर्शन दिया।

ता. २३-११-१४ को प.पू. बड़े महाराजश्रीने पधारकर सभी को आशीर्वाद प्रदान किये। (शा. चैतन्यस्वरुपदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांदीनगर (से-२३) में महामंत्रलेखन का आयोजन

श्री नरनारायणदेव महामहोत्सव के उपलक्ष में स.गु. शा.स्वा. हरिकेशवदासजी की प्रेरणा से गांधीगनर से-२३ श्री स्वामिनारायण मंदिर द्वारा स्वामिनारायण महामंत्र लेखन का आयोजन किया गया।

जिस में हरिभक्तोंने उत्साह से सवा करोड मंत्रो का लेखन पूर्ण करके सभी नोटबुको को एकादशी की साम को सभा में मंदिर में लाये थे। उन नोटबुको को अहमदाबाद श्री नरनारायणदेव को अर्पण किया गया।

प्रासंगिक सभा में शा. हरिप्रियदासजीने श्री नरनारायणदेव

का माहात्म कहा । ता. २४-१२-१४ से ता. २८-१२-१४ तक प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीके पवित्र सानिध्य में भव्य महोत्सव मनाया जायेगा । इस प्रसंग की विस्तृत जानकारी हरिभक्तो को प्रदान की गयी । (शा. हरि स्वामी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा तुलसी वीवाह का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा बडे महाराजश्री के आसीर्वाद से, स.गु. स्वा. हरिप्रकाशदासजी तथा माधव स्वामी की प्ररणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर नारणपुरा में ता. ५-११-१४ तथा ६-११-१४ को भव्य तुलसी विवाह का आयोजन किया गया । जिस में कन्या पक्ष के यजमान नारणपुरा मंदिर में अखंड सेवा प्रदान करनेवाले प.भ. खीमजीभाई भगवानदास पटेल का समग्र परिवारने लाभ लिया । वरपक्ष के यजमान प.भ. प्रकाशभाई आनंदप्रसाद ब्रह्मभट्ट परिवार था । वरपक्ष के मामा के यजमान हार्दिक अशोकबाई तथा कन्यापक्ष के मामा के यजमान अ.नि. मणीभाई करशनभाई पटेल का परिवार था ता. ५-११-१४ को यजमान के घर विधिपूर्वक मंडप-मुहूर्त, रास-गरबा का आयोजन किया गया । दूसरे दिन दो पहर ४ बजे हरिभक्तो की उपस्थिति में वरपक्ष के यजमान के घर से धूमधाम से बारात निकाली गयी । और विवाह सम्पन्न किया गया । साम को ६-०० बजे प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का आगमन होते ही यजमान परिवार द्वारा सुंदर स्वागत किया गया । प.पू. आचार्य महाराजश्रीने यजमानो को आशीर्वाद देते हुए उत्सव की स्मृति भेट अर्पण की । रसोई में मुकुंद स्वामी (मूली) तथा महिला मंडल तथा युवक मंडलने प्रेरणारुप सेवा की । सभा संचालन साधु प्रेमस्वरुपदासजी ने किया । (कोठारीश्री नारणपुरा)

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की ाज्ञा-आशीर्वाद से निम्नलिखित गाँवो में धार्मिक प्रवृत्ति का आयोजन किया गया

श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - वालोल : मंत्रलेखन - ११०००००, वचनामृत पारायण - १८, भक्तचिंतामणी - ३६५७४, प्रदक्षिणा - ३६६१, माला - ५१००, दंडवत - ५००

श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - नारणघाट : मंत्रलेखन - ८०६०००, वचनामृत पारायण - ६, भक्तचिंतामणी पारायण - २, शिक्षापत्री पारायण - ४५, जनमंगल पाठ - ६५८०, प्रदक्षिणा - १२३१, माला - ४६५१, दंडवत - ४०६०, १५१ मिनिट की स्वामिनारायण महामंत्र की धून की गयी ।

श्री नरनारायणदेव महिला मंडल - सुघड : शिक्षापत्री पारायण - ९०३, जनमंगल पाठ - ७२१, प्रदक्षिणा - ९६२१, दंडवत - ४५० ।

मोरबी की सत्संगी बहनो द्वारा : वचनामृत पारायण - १३५, माला - १०३००, जनमंगल पाठ - १९५००, मंत्रलेखन - ३२०००० ।

जेतलपुर (मोरबी) : वचनामृत पारायण - ५२, जप माला - २११५००, दंडवत - १५०००।

(नयनाबहन एस. पटेल - बावोल)

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से अहमदबादा कालुपुर मंदिर हवेली में एकादशी की सभा के आयोजन में उपस्थित बहनो के महिला मंडल तथा गाँव में सभा करने जानेवाली बहनो द्वारा की जानेवाली धार्मिक प्रवृतियाँ

मंत्रलेखन - १५०००००, मंत्र जाप - २७८०००० , जनमगंल नामावलि - १०००० , शिक्षापत्री पाठ - १०८, वचनामृत पारायण - २, भक्तचिंतामणी पारायण - १, छपैयाधीश बाल स्वरुप घनश्याम महाराज के चमत्कार १०८ ।(रीटाबहन जे. ठक्कर, वस्त्रापुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर टोरडाधाम

श्री नरनारायणदेव महोत्सव के उपलक्ष में प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा सेवक रीटाबहन की प्रेरणा से टोरडा महिला मंडल की बहनो द्वरा की गयी धार्मिक प्रवृतियाँ ।

माता - ९१३१, पंचाग प्रणाम - ३७००१, प्रदक्षिणा - ३६६०१, भक्तचिंतामणी पाठ - ५१, अखंड धून - १५१ मिनिट, जनमंगल पाठ की आहुती होमात्मक तरीके से प्रत्येक हरिभक्तो के घर-घर जाकर की गयी । टोटल १०९, कुल आहुति २६५६०१ दी गयी । (महिला मंडल टोरडा)

वावोल (तरपोज)

वावोल (तरपोज) श्री स्वामिनारायण सत्संगी हरिभक्तो द्वारा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाजश्री की आज्ञा से, वडनग रमदिर क महंत शा. स्वा .नारायणवल्लदासजी के मार्गदर्शन अनुसार कार्तिक शुक्लपक्ष-६ ता. २९-१०-१४ से कार्तिक शुक्लपक्ष-१० ता. २-११-१४ तक ''नूतन श्री नारायणैश्वर महादेव'' मंदिर में श्री शिव परिवार की पुनः प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव का आयोजन किया गया । जिस में वावोल के प.भ. पटेल मरघाभाई चतुरभाई तथा धर्मपत्नी जीजाबहन के स्मरण हेतु श्रीमद् भागवत पंचान्ह पारायण ज्ञान यज्ञ का आयोजन किया गया । तथा त्रिदीवसीय श्री महारुद्रप्रयाग का भी आयोजन किया गया कथा-पारायण का लाभ शा.स्वा. विश्वप्रकाशदाजीने प्रदान किया । इस प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने ता. २-११-१४ कार्तिक शुक्लपक्ष-१० को नूतन मंदिर में शिव परिवार की पुनः प्राण प्रतिष्ठा तथा कथा-पारायण

की पूर्णाहुति अपने हाथो से की । इस प्रसंग पर अहमदाबाद मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी तथा अन्य विद्वान संतोने प्रवचन द्वारा हरिभक्तो की सेवा की प्रशंसा की । इस प्रसं गपर वावोल मंदिर की सां.यो. पू. सूरजबाई तथा पू. सां.यो. झवरबाई तथा अन्य सांख्ययोगी बाईओने प्रसंग में पांच दिन पधारकर प्रसंग की शोभा बढाई । अंत में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने वावोल गाँव के हरिभक्तो की श्री नरनारायणदेव के प्रति निष्ठा की प्रशंसा की । वावोल के युवा मंडल के युवानोने परिश्रम के साथ प्रसंग मे सेवा की। (साधु धर्मविहारीदास वडनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच-सत्संग सभा तथा खीचडी उत्सव का आयोजन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा तथा धर्मकुल परिवार की आशीर्वाद से महंत स.गु. स्वा. लक्ष्मणजीवनदासजी की प्रेरणा से एप्रोच मंदिर के आगामी दशाब्दी महोत्सव के उपलक्ष में प.भ. मोहनभाई एम. ढोलरीया की तरफ से ता. १३-१२-१४ को रात्रि सत्संग सभा तथा खीचड़ी उत्सव का आयोजन किया गया। कीर्तन भक्ति के बाद कोठारी स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा नारणपुरा मदिर के महंत स्वामीने प्रसंगोचित सुंदर उद्‌बोधन किया। (गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (पाटीदार) डागंरवा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर डांगरवा के १२ वें वार्षिक पाटोत्व के अंतर्गत श्रीमद् भागवत दश्म स्कंधपंचान्ह पारायण ज्ञानयज्ञ ता. २७-११-१४ से ता. १-१२-१४ तक धूमधाम से मनाया गया । स.गु. शा.स्वा. हरिॐप्रकाशदासजी (नारणपुरा महंतश्री) के मुख से कथाश्रवण करके हरिभक्तोने धन्यता का अनुभव किया ।

इस प्रसंग पर प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्रीने पधारकर हरिभक्तो को आशीर्वाद दिये । (कोठारी बलदेवभाई वि.)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी धून तथा सत्संग सभा का आयोजन किया गया

समग्र धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा प.भ. दासभाई की प्रेरणा से अ.नि. रलियातबाई (जिन्होने बहनो क मंदिर में ३० वर्ष तक सेवा पूजा की थी)के स्मरण हेतु ता. २-११-१४ एकादशी को ४ घंटे की महामंत्र धून की गयी । इस प्रसंग की सभा में पू. शा.स्वा. निर्गुणदासजी तथा एप्रोच मंदिर के संतोने निष्काम भक्ति के उपर विवेचन किया । (गोरधनभाई सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर स्वारोल पांचवा पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वा. हरिस्वरुपदासजी की प्रेरणा से यहाँ के श्री स्वामिनारायण मंदिर का वार्षिक पाटोत्सव ता. ७-११-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथो से ठाकुरजी का षोडशपोचार अभिषेक विधिपूर्वक सम्पन्न किया गया । प्रासंगिक सभा में संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने आशीर्वाद प्रदान किये । संतो ने कालुपुर मंदिर के कोठारी जे. के. स्वामी तथा वासुदेवचरणदासजी प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ पधारे थे । प.भ. चिमनलाल मणीलाल काछीया (मुंबई) परिवारने यजमान पद का लाभ लिया ।

(कोठारीश्री)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुरेन्द्रनगर में ९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव मनाया गया

प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से, महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से ठाकुरजी का ९ वा ँ वार्षिक पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

पाटोत्सव के प्रसंग के उपलक्ष में ता. २-११-१४ से ता. १-११-१४ तक श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण । स.गु. शा. स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण) ने की ।

ता. ३-११-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संत-मंडल के साथ पधारे थे। समग्र सभा आशीर्वदा देते हुए महाराजश्रीने कहा, ''आगामी दशाब्दी पाटोत्सव धूमधाम से मनाने हेतु मूली के गाँवो में सत्संग प्रचार तथा सामाजिक प्रवृत्ति करने हेतु संतो - हरिभक्तो को आज्ञा की । बहनो के आग्रह से प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा बड़ी गादीवाला पधारी थी ।

पाटोत्सव के यजमान प.भ. जसुभा राजुभा झाला (पूर्व प्रमुख नगरपालिका सुरेन्द्रनगर) परिवार का था । पाटोत्सव प्रसंग में श्री हरियाग, सांस्कृतिक कार्यक्रम, अन्नकूट, महाभिषेक जैसे भिन्न-भिन्न आयोजन किये गये । पू. स्वा. नित्यप्रकाशदासजीने सुंदर व्याख्यान किया । सभा संचालन शा.स्वा. प्रेमवल्लभदासजी तथा शैलेन्द्रसिंह झालाने किया ।

समग्र आयोजक कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से श्री नरनारायणदेव युवक मंडलने किया था । अहमदाबाद, मूली, चराडवा आदि स्थानो से तथा सांख्ययोगी बाईयो पधारी थी । रसोई की सेवा में राजु स्वामी, संत मंडल, शांति स्वामी, नारायण स्वामी, भक्ति स्वामी, रवि भगत तथा दिपेश भगत की सेवा प्रेरणारुप थी । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कारोल (पूराना)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से मूली के महंत स्वामी श्यामसुंदरदासजी

तथा शा. स्वा. दासवल्लभदासजी (लींबडी महंतश्री) की प्रेरणा से राधाकृष्णदेव कारोल (पुराना) (ता. चूडा) के मंदिर में विराजमान ठाकुरजी का प्रथम पाटोत्सव कार्तिक शुक्ल-७ ता. ३०-१-१४ को धूमधाम से मनाया गया । पाटोत्सव के मुख्य यजमान श्री मगनभाई ठाकरसीभाई पटेल (भालका) थे । इस प्रसंग पर होमात्मक पूजन, अन्नकूट आरती तथा महाप्रसाद का आयोजन किया गया ।

मूली के संतोने देव तथा आचार्य महाराजश्री के प्रति निष्ठा रखने की उपदेशात्मक बाते की । (कोठारी नरेन्द्रभाई सोनी)

महाप्रसादीभूत लीमडी श्री स्वामिनारायण मंदिर पाटोत्सव - कथा पारायण

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा मूली के सगु. स्वा. प्रभुजीवनदासजी एवम् स्वामी घनश्यामप्रकाशदासजी की प्रेरणा से श्रीहरि के दिव्य चरणो से अंकित प्रसादीभूत लीमडी श्री स्वामिनारायण मंदिर का २१ वाँ वार्षिक पाटोत्सव ता. २६-११-१४ को धूमधाम से मनाया गया ।

इस प्रसंग के उपलक्ष में श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण ता. २०-११-१४ से ता. २६-११-१४ तक शा. स्वा. घनश्यामप्रकाशदाजी के वक्तापद पर संपन्न हुई । सात दिन तक महाभिषेक, अन्नकूट, महापूजा, विष्णुयाग तथा सांस्कृतिक कार्यक्रमो का आयोजन किया गया । ता. २६-११-१४ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री संतो पार्षदो के साथ पधारे । महाराजश्री के हाथो से ठाकुरजी की आरती के बाद यज्ञ की पूर्णाहुति की गयी । प्रसंग में संत मंडल तथा सांख्ययोगी बाई उपस्थित रही । सभा संचालन पुराणी स्वामी भक्तिविहारीदासने किया । समग्र प्रसंग के मार्गदर्शक कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी थे । अन्य सेवा में भगवतचरण स्वामी तथा मुक्तजीवन स्वामीने सहयोग किया । (शैलेन्द्रसिंह झाला)

स.गु. प्रेमानंद स्वामी के बलोल (भाल) गाँव में मंदिर का ९ वाँ पाटोत्सव

अमदावाद श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवम् समग्र धर्मकुल आज्ञा-आशीर्वाद से तथा स.गु. शा. स्वा. नारायणप्रसाददासजी (मूली मंदिर पूर्व महंतश्री) की प्रेरणा से स.गु. कवि सम्राट देवानंद स्वामी की प्रागट्य भूमि बलोल (भाल) श्री स्वामिनारायण मंदिर में बिराजमान सर्वोपरि श्री स्वामिनारायण भगवान आदि देवोकां ९ वाँ पाटोत्सव प.पू. बड़े महाराजश्री के हाथों से विधिपूर्वक मनाया गया ।

इस प्रसंग पर सभा में धामोधाम से पधारे हुए संतोने अपनी प्रेरक वाणी में आशीर्वचन कहे । पाटोत्सव के यजमान पू. अरबाई थी । (संदिप चावडा)

विदेश सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर इटास्का

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री एवम् प.पू. लालजी महाराजश्री के आशीर्वाद से ईटास्का श्री स्वामिनारायण मंदिर में दिन प्रतिदिन सत्संग की निरंतर वृद्धि हो रही है ।

मंदिर में विजया दशमी प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री का ४२ वां प्राकट्योत्सव शरदोत्सव धूमधाम से मनाया गया ।

काली चतुर्दशी को श्री हनुमानजी का पूजन आरती की गयी । नूतन वर्ष पर मंगला आरती से शयन आरती तक हरिभक्तो को दर्शन-कथावार्ता का लाभ दिया गया । महाराजश्री तथा समग्र धर्मकुल के आशीर्वचन को पढकर सुनाया गया । ठाकुरजी को भव्य अन्नकूट का भोग श्री हितेनभाई पाटडीया की तरफ से लगाया गया । भव्य तुलसी विवाह का आयोजन किया गया । जिस में वरपक्ष के यजमान कनुभाई तथा अ.सौ. सरोजबहन चौधरी, श्री गोविंदभाई एवम् अ.सौ. रेखाबहन पटेल तथा कन्या पक्ष के यजमानश्री महेन्द्रभाई तथा अ.सौ. रमीलाबहन पटेल, श्री फुलाभाई एवम् अ.सौ. मीनाबहन द्विवेदी आदि के परिवार गण थे ।

समग्र प्रसंग के मार्गदर्शक मंदिर के महंत स्वामी पू. जे.पी. स्वामी तथा शा. स्वा. विश्वविहारीदासजी थे । युवक मंडल, हरिभक्तों एवम् महिला मंडल की सेवा प्रेरणारुप थी ।

(वसंत त्रिवेदी - शिकागो)

कलिवलेन्ड (अमेरिका) के हमारे प.भ. प्रकाशभाई पटेल के अच्छे स्वास्थ्य हेतु महामंत्र धुन का आयोजन किया गया

कलिवलेन्ड (अमेरिका) श्री स्वामिनारायण मंदिर में सक्रिय कार्यकर प्रेसिडेन्ट प.भ. प्रकाशभाई पटेल के अचानक बिमार होने पर उनके स्वास्थ्य हेतु प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में परम कृपालु श्री नरनारायणदेव के सानिध्य में पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन में गायक कलाकार श्री जयेशभाई सोनी द्वारा श्री स्वामिनारायण महामंत्र की धून का आयोजन किया गया । प.पू. बड़े महाराजश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्रीने प्रकाशभाई के स्वास्थ्य हेतु श्री नरनारायणदेव के चरणों अंत:करण से प्रार्थना कि है ।

(ब्र. राजेश्वरानंदजी)

अक्षरनिवासी संत-हरिभक्तों को भावभीनी श्रद्धांजली

जेतलपुरधाम : स.गु. शा. स्वामी माधवजीवनदासजी गुरु अ.नि. स्वामी नरहरिप्रसाददासजी ता. ३०-११-१४ को श्रीजी महाराज का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुये हैं। छोटी उम्र के संत के अक्षरनिवास से पू. महंत स्वामी के मंडल में बहुत बड़ी कमी हुइ।

अमदावाद : प.भ. मुगटलाल आत्माराम पाठक ता. ९-१०-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

अमदावाद : प.भ. अंबाला पटेल (देउसणावाला) ता. १३-१०-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

अमदावाद : हर्षद कोलोनी श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) की पुजारी रसीलाबहन मोहनभाई ठुमर (उम्र. ८८ वर्ष) ता. २०-११-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

दहेगाँव : प.भ. अतुलभाई रमणभाई अमीन ता. २-११-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

उनावा : प.भ. चतुरभाई भगाभाई पटेल ता. १३-११-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

आदिपुर-कच्छ : प.भ. नरेन्द्रभाई छगनभाई मिराणी ता. १२-११-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

अमदावाद-घोडासर : प.भ. दोशी राधाबहन नगीनभाई ता. २३-१०-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करती हुई अक्षरनिवासिनी हुई हैं।

अमदावाद-सोजा : प.भ. अमृतलाल मगनलाल ता. १७-११-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

अमदावाद-निकोल : प.भ. रणछोडभाई देवाणी के पिताजी प.भ. भीमजीभाई जीवरामभाई देवाणी (उम्र ९६ वर्ष) ता. २१-११-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए।

वहेलालधाम : के मुक्तराज जेसंगभाई परिवार के प.भ. नाजुभाई मधुभाई अमीन के पुत्र चि. पुत्र ध्रमित ता. १०-११-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

शिकागो : बड़े भगत के पिताजी - जो यहाँ के मंदिर की आफिस सम्हालते थे शिकागो मंदिर की अखंड सेवा करने वाले की भी तथा मंदिर निर्माण के कार्य को ही श्रेष्ठ देकर, मंदिर को ही अपना घर मानकर सेवा करने वाले, ठाकुरजी के फूलहार की व्यवस्था, हिसाबकिताब, पहुंच लिखने आदि अनेक प्रकार की सेवा नि:स्पृहता से करने वाले ऐसे श्री नरनारायणदेव के निष्ठावान प.भ. रमणबाई सी. पटेल (मूल आणंद के) ता. २३-१२-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

लॉस एजलस : प.भ. ईश्वरभाई जी. पटेल (ईश्वरदादा) (मूल गाँव खेरोल प्रांतीज), श्री नरनारायणदेव के अति निष्ठावान भक्त स्वरुप ता. २४-१२-१४ को श्रीहरि का अखंड स्मरण करते हुए अक्षरनिवासी हुए हैं।

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) अमेरिका के श्री स्वामिनारायण मंदिर एटलान्टा में तुलसी विवाह । (२) बलोल (मूली देश) मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा आरती उतराती हुई यजमान अमरबा आदि महिलाये ।(३) कलोल पंचवटी मंदिर शाकोत्सव करते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री तथा शा. पू. आत्मप्रकाशदासजी , पू. नारायणवल्लभदासजी आदि संत ।

Registered under RNI NO-GUJHIN/2007/20220 "Permitted to post at Ahd. PSO on 11 the every month under postal REG. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd. valid up to 31-12-2017

(१) अमदावाद कालुपुर मंदिर के सभामंडप में धनुर्मास की धून करते हुये संत । (२) न्युजीलेन्ड-ओकलेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर के सभा मंडप में आशीर्वाद देते हुये प.पू. बड़े महाराजश्री ।